



मेरी खेती

जनवरी 2025 | मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 10
बागवानी फसलें	10 - 13
मशीनरी	13 - 32
कृषि सलाह	32 - 37
पशुपालन-पशुचारा	38 - 40
औषधीय खेती	40 - 43

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

सर्दी के मौसम में रबी फसलों के लिए सिंचाई क्यों है अत्यंत आवश्यक

भारत की कृषि व्यवस्था में रबी फसलें किसानों की आय का एक मजबूत आधार मानी जाती हैं। गेहूं, चना, सरसों, मटर, जौ जैसी रबी फसलें सर्दी के मौसम में उगाई जाती हैं और इनकी सफलता काफी हद तक सही समय पर सिंचाई पर निर्भर करती है। अक्सर यह भ्रम रहता है कि सर्दियों में तापमान कम होने के कारण पानी की आवश्यकता कम होती है, लेकिन वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। सर्दी के मौसम में भी रबी फसलों के लिए पानी उतना ही आवश्यक होता है, जितना अन्य मौसमों में, बल्कि कई अवस्थाओं में तो यह और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है।

मिट्टी में नमी बनाए रखने की आवश्यकता

सर्दियों में भले ही तापमान कम होता है, लेकिन इस मौसम में वर्षा बहुत सीमित होती है। ऐसे में मिट्टी में प्राकृतिक नमी तेजी से खत्म होने लगती है। यदि समय पर सिंचाई न की जाए, तो फसल की जड़ें पर्याप्त नमी नहीं ले पातीं। मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई बेहद जरूरी है, ताकि पौधे की जड़ें मजबूत बनें और वह पोषक तत्वों को सही ढंग से शोषित कर सके।

फसल की वृद्धि और विकास में पानी की भूमिका

रबी फसलों के शुरुआती विकास चरण में पानी पौधों की कोशिकाओं के निर्माण, तने की बढ़वार और पत्तियों के विकास के लिए आवश्यक होता है। सर्दी के मौसम में अगर मिट्टी सूखी हो जाए, तो पौधों की वृद्धि रुक जाती है और फसल कमजोर रह जाती है। गेहूं जैसी फसल में टिलरिंग (कल्ले निकलना) की अवस्था पर सिंचाई न मिलने से सीधे-सीधे उपज पर नकारात्मक असर पड़ता है।

पोषक तत्वों के अवशोषण के लिए जरूरी है सिंचाई

मिट्टी में मौजूद खाद और उर्वरक तभी पौधों तक पहुंच पाते हैं, जब मिट्टी में पर्याप्त नमी हो। सर्दी में यदि खेत सूखा रहता है, तो चाहे कितनी भी अच्छी खाद डाली जाए, पौधे उसे सही से नहीं ले पाते। पानी खाद को घोलकर जड़ों तक पहुंचाता है, जिससे फसल को आवश्यक नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश मिल पाता है।

ठंड से बचाव में भी मदद करता है पानी

बहुत से किसान यह नहीं जानते कि सर्दी के मौसम में सिंचाई फसल को पाले (Frost) से बचाने में भी सहायक होती है। जब खेत में हल्की नमी रहती है, तो तापमान गिरने का असर फसल पर कम पड़ता है। विशेष रूप से सरसों, आलू और सब्जियों में हल्की सिंचाई पाले से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम कर सकती है।



श्री दिलीप यादव
संपादक, गेशिखेती

सलाहकार मंडल



श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक



कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीकेटी



डॉ. एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर



प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा



डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस



डॉ. हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइटेस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय



डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश



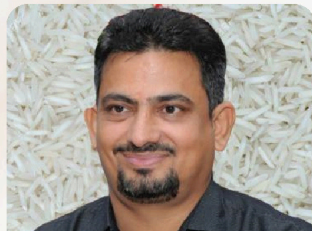
डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान



डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा



डॉ. एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार



डॉ. रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)



डॉ. सी बी सिंह
एक्स - सीनियर साइटेस्ट, IARI, पूसा



तेजपाल सिंह
प्रगतशील किसान

**मटर की टॉप 3
हाई-यील्ड किस्में
अधिक मुनाफा देने
वाली मटर की
प्रमुख किस्में**

मटर की टॉप 3 हाई-यील्ड किस्में - अधिक मुनाफा देने वाली मटर की प्रमुख किस्में

30-45 दिन में तैयार! रबी सीजनमें उगाइए मटर की ये फास्ट ग्रोइंग किस्में

Matar ki top 3 variety: अगर आप इस रबी सीजन में कम लागत में ज्यादा कमाई करने वाली फसल की तलाश में हैं, तो ताज़ी हरी मटर (Matar ki kheti आपके लिए बेहतरीन विकल्प साबित हो सकती है। देशभर में किसानों की रुचि तेजी से मटर की खेती की ओर बढ़ रही है, क्योंकि यह कम समय में तैयार होने वाली फसल है और फरवरी-मार्च के दौरान बाजार में इसकी मांग भी चरम पर होती है। मांग बढ़ने के साथ मटर के दाम भी अच्छे मिलते हैं, जिससे किसानों को शानदार मुनाफा मिलता है। ICAR द्वारा विकसित वी.एल. माधुरी, वी.एल. सब्जी मटर-15 और पूसा श्री ऐसी उन्नत किस्में हैं जो अधिक उत्पादन, बेहतर गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं।

मटर की टॉप 3 उन्नत और लाभदायक किस्में

1. वी.एल. माधुरी (VL Madhuri)

यह मटर (Pea farming) की एक आधुनिक और खास किस्म है, जिसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है

कि इसके दानों को बिना छिलके भी खाया जा सकता है। स्वाद, दानों की कोमलता और बाजार में बढ़िया दाम—तीनों मामलों में यह किस्म बाकी से काफी बेहतर मानी जाती है।

मुख्य विशेषताएँ

- पंजाब, यूपी, बिहार और झारखंड के किसानों के लिए अत्यंत उपयुक्त किस्म।
- नवंबर में बुवाई करने पर 122-126 दिनों में फसल तैयार हो जाती है।
- उपज क्षमता काफी अधिक—एक हेक्टेयर में लगभग 13 टन तक उत्पादन।
- इस किस्म में उकठा रोग के प्रति अच्छी प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है, जिससे फसल सुरक्षित रहती है।
- दानों की गुणवत्ता बढ़िया होने के कारण बाजार में इसकी मांग बनी रहती है।

2. वी.एल. सब्जी मटर-15 (VL Sabji Matar-15)

यह ठंडी जलवायु के लिए विशेष रूप से विकसित

किस्म है और उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में उत्कृष्ट उत्पादन देती है। कम अवधि में पकने के कारण यह उन किसानों के लिए आदर्श है जो जल्दी मुनाफा पाना चाहते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- रबी सीजन में बुवाई के लिए बेहतरीन किस्म।
- मात्र 128-132 दिनों में फसल तैयार।
- उत्पादन क्षमता 100-120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

कई प्रमुख रोगों के प्रति प्रतिरोधी—

- चूर्णिल आसिता
- म्लानि
- सफेद सड़ांध
- पर्ण-झुलसा

पौधे 60-70 सेमी ऊँचे होते हैं और फलियाँ आकर्षक हरी एवं हल्की घुमावदार।

3. पूसा श्री मटर (Pusa Three)

अगर आप जल्दी तैयार होने वाली मटर की किस्म (Matar ki best variety) खोज रहे हैं, तो पूसा श्री आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प है। इसका अगेती होना किसानों के लिए बड़ी राहत है, क्योंकि यह मौसम के शुरुआती समय में ही अच्छी पैदावार देने लगती है।

मुख्य विशेषताएँ

- अगेती किस्म—बहुत जल्दी फल देना शुरू कर देती है।
- बुवाई के लगभग 50-55 दिनों बाद ही फलियाँ आने लगती हैं।
- प्रति एकड़ 20-21 क्विंटल तक उत्पादन संभव।
- प्रत्येक फली में लगभग 6-7 दाने होने से दानों की भरावट अच्छी रहती है, जो बाजार में ज्यादा दाम दिलाती है।
- उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में खेती के लिए विशेष रूप से उपयुक्त।

निष्कर्ष

अगर किसान रबी के मौसम में कम समय में ज्यादा उत्पादन और बढ़िया लाभ लेना चाहते हैं, तो ICAR द्वारा विकसित ये तीनों मटर की किस्में बेहद भरोसेमंद विकल्प हैं। कम लागत, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उच्च उपज—इन सभी खूबियों के कारण किसान इन किस्मों को अपनाकर अपनी कमाई को कई गुना बढ़ा सकते हैं।



गेहूं की फसल में रतुआ रोग: पहचानें लक्षण और अपनाएं प्रभावी उपचार

गेहूं की खेती बड़े पैमाने पर रबी के मौसम में की जाती है। गेहूं की फसल को ठंडे तापमान की आवश्यकता होती है। गेहूं की फसल पाले को कुछ हद तक सहन कर सकती है। गेहूं की फसल को भी कई रोगों का खतरा होता है। रोग फसल की उपज पर बहुत असर डालते हैं। गेहूं की फसल में रतुआ रोग सबसे घातक होता है जिसको अंग्रेजी में Rust के नाम से जाना जाता है। इन रोगों का प्रकोप होने पर क्या नियंत्रण उपाय करने चाहिए, इस लेख में हम आपको बताएंगे।



MASSEY FERGUSON



MASSEY FERGUSON
254 DYNASMART

गेहूं की फसल में लगने वाले 3 रतुआ रोग

• भूरा रतुआ रोग

भूरा रतुआ रोग पक्सीनिया रिकॉडिटा ट्रिटिसाई नामक कवक से होता है, जो भारत में व्यापक रूप से पाया जाता है। इस रोग की शुरुआत हिमालय (उत्तर भारत) और निलगिरी पहाड़ियों (दक्षिण भारत) से होती है, जहां यह कवक जीवित रहता है। वहां से यह हवा के माध्यम से मैदानी क्षेत्रों में फैलकर गेहूं की फसल को प्रभावित करता है।

लक्षण

- शुरुआत में पत्तियों पर नारंगी रंग के छोटे-छोटे बिंदु दिखाई देते हैं।
- समय के साथ, ये बिंदु फैलकर पूरी पत्ती को ढक लेते हैं।
- आर्द्रता बढ़ने पर ये धब्बे काले रंग के हो जाते हैं।

2. पीला रतुआ रोग (येलो रस्ट)

यह रोग पक्सीनिया स्ट्राइफारमिस नामक कवक से होता है।

लक्षण

- पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीली धारियां दिखाई देती हैं।
- समय के साथ, ये धारियां पूरी पत्तियों को पीला कर देती हैं।
- संक्रमित पौधों से पीला पाउडर गिरने लगता है।

प्रभाव

- यह रोग यदि कल्ला बनने से पहले आता है, तो फसल में बाली नहीं आती।
- यह हिमालय से उत्तर भारतीय मैदानों तक फैलता है।
- गर्मी बढ़ने पर रोग कम हो जाता है, और धारियां काले रंग में बदल जाती हैं।

3. तना रतुआ या काला रतुआ रोग

यह रोग पक्सीनिया ग्रैमिनिस ट्रिटिसाई नामक कवक के कारण होता है।

प्रसार

- यह निलगिरी और पलनी पहाड़ियों से शुरू होता है और मुख्यतः दक्षिण व मध्य भारत में अधिक प्रभावी होता है।
- उत्तरी क्षेत्रों में यह फसल पकने के समय कम प्रभाव डालता है।

लक्षण

- तनों और पत्तियों पर चॉकलेट जैसा काला रंग दिखाई देता है।
- यह रोग 20 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर तेजी से फैलता है।

लोक-1 जैसी प्रजातियों में यह रोग आम है, जबकि नई दक्षिणी और मध्य प्रजातियां इससे बचाव कर सकती हैं।

तीनों रतुआ रोगों का इलाज कैसे करें?

सबसे पहले बुवाई के समय इन रोगों से प्रतिरोधी बीजों की ही बुवाई करें यानि की बुवाई के लिए उन्नत प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें।

रोग की रोकथाम के लिए बुवाई से पहले बीज को थाइरम 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।

खड़ी फसल में रोग का प्रकोप दिखाई देने पर रोकथाम हेतु खड़ी फसल में प्रोपिकोनोजोल 25 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।



रबी सीजन में गेहूं फसल की उपज को बढ़ाने के लिए सिंचाई की अहम भूमिका

भारत के अंदर रबी सीजन में सरसों व गेहूं की खेती Mustard and wheat cultivation अधिकांश की जाती है। गेहूं की खेती wheat cultivation में चार से छह सिंचाईयों की जरूरत होती है। ऐसे कृषकों को गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए गेहूं की निर्धारित समय पर सिंचाई करनी चाहिए। अगर कृषक भाई गेहूं की समय पर सिंचाई करते हैं तो उससे काफी शानदार पैदावार हांसिल की जा सकती है। इसके साथ ही सिंचाई करते वक्त किन बातों का ख्याल रखना चाहिए। कृषकों को इस बात की भी जानकारी होनी आवश्यक है। सामान्य तौर पर देखा गया है, कि बहुत सारे किसान गेहूं की बिजाई करते हैं। परंतु, उनको प्रत्याशित उपज नहीं मिल पाती है। वहीं, किसान गेहूं की बुवाई के साथ ही सिंचाई पर भी विशेष तौर पर ध्यान देते हैं तो उन्हें बेहतर उत्पादन हांसिल होता है। गेहूं एक ऐसी फसल है, जिसमें काफी पानी की जरूरत होती है। परंतु, सिंचाई की उन्नत विधियों का इस्तेमाल करके इसमें पानी की काफी बचत की जा सकती है। साथ ही, शानदार उत्पादन भी हांसिल किया जा सकता है।

गेहूं की फसल में जल खपत Wheat crop required water

गेहूं की फसल Wheat Crop की कब सिंचाई की जाए यह बात मृदा की नमी की मात्रा पर निर्भर करती है। अगर मौसम ठंडा है और भूमि में नमी बरकरार बनी हुई है, तो सिंचाई विलंब से की जा सकती है। इसके विपरीत अगर जमीन शुष्क पड़ी है तो शीघ्र सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। वहीं, अगर मौसम गर्म है तो पौधों को सिंचाई की ज्यादा जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में समय-समय पर सिंचाई की जानी चाहिए ताकि जमीन में नमी की मात्रा बनी रहे और पौधे बेहतर ढंग से बढ़ोतरी कर सकें। गेहूं की शानदार उपज के लिए इसकी फसल को 35 से 40 सेंटीमीटर जल की जरूरत होती है। इसकी पूर्ति कृषक भिन्न-भिन्न तय वक्त पर कर सकते हैं।

गेहूं की फसल हेतु सिंचाई Wheat Crop Irrigation

सामान्य तौर पर गेहूं की फसल में 4 से 6 सिंचाई करना काफी अनुकूल रहता है। बता दें, कि इसमें रेतीली भूमि में 6 से 8 सिंचाई की जरूरत होती है। रेतीली मृदा में हल्की सिंचाई की जानी चाहिए,

जिसके लिए 5 से 6 सेंटीमीटर पानी की आवश्यकता होती है। साथ ही, भारी मिट्टी में गहरी सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसमें कृषकों को 6-7 सेंटीमीटर तक सिंचाई करनी चाहिए। यह समस्त सिंचाई गेहूं के पौधे की भिन्न-भिन्न अवस्था में करनी चाहिए, जिससे ज्यादा लाभ हांसिल किया जा सके।



आम की फसल में लगने वाले किट और उनके नियंत्रण के उपाय

आम की फसल में लगने वाले प्रमुख किट

आम की फसल में कई प्रकार के रोगों लगते हैं, जिस कारण से आम की उपज में काफी हद तक कमी आती है इन रोग नियंत्रित करने के लिए समय पर इनको नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है इस लेख में हम आपको आम की फसल में लगने वाले किट और उनके नियंत्रण के उपाय के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

आम वृक्ष छेदक

शिशु (निम्फ) और वयस्क दोनों कोमल शाखाओं और पुष्पगुच्छों (फूलों की कलियों) से रस चूसते हैं, जिससे फूलों की कलियों का मुरझाना और झड़ना तथा शाखाओं और पत्तियों का सूखना और मुरझाना होता

है। संक्रमित पेड़ों की फूलों की डंठल और पत्तियाँ चिपचिपी हो जाती हैं, क्योंकि हॉपर्स (कीट) द्वारा स्रावित मधुरस (हनी-ड्यू) जमा हो जाता है, जिससे काले कालिख जैसे फफूंद (सूटी मोल्ड) की वृद्धि होती है। गैर-पुष्पित मौसम में हॉपर्स छाल की दरारों और खांचों में छिपकर रहते हैं।

आम वृक्ष छेदक नियंत्रण के उपाय:

पेड़ों को निकट नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि अधिक घने बागानों में संक्रमण अधिक गंभीर होता है। बाग को साफ-सुथरा रखना चाहिए, इसके लिए हल चलाना और खरपतवार हटाना आवश्यक है। घनी छाया वाली शाखाओं की छंटाई करनी चाहिए ताकि हवा और धूप आसानी से पहुँच सके। अधिक मात्रा में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग से बचें।

रासायनिक नियंत्रण:

डाइमैथोएट 30 EC या मोनोक्रोटोफॉस 36 SL की 2.5-3.3 लीटर मात्रा, मेथिल डेमेटॉन 25 EC या मेलाथियोन 50 EC की 1.5-2.0 लीटर मात्रा को 1500-2000 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर मिलाकर छिड़काव करें। एसिफेट 75 SP @ 1 ग्राम/लीटर, फोसालोन 35 EC @ 1.5 मिली/लीटर, या नए अणु जैसे बुप्रोफेज़िन 25 SC @ 1-2 मिली/लीटर पानी, इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL @ 2-4 मिली/वृक्ष या लैम्ब्डा सायहलोथ्रिन 5 EC @ 0.5-1.0 मिली/लीटर पानी को 10-15 लीटर पानी प्रति वृक्ष के अनुसार छिड़कें।

जैविक नियंत्रण:

किसी भी कीटनाशक में नीम का तेल 5 मिली/लीटर पानी मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है। 3% नीम का तेल या 5% नीम बीज की गिरी का चूर्ण घोल का छिड़काव करें।

क्षति के लक्षण:

गुबरैले (grubs) पेड़ की शाखाओं और मुख्य तने

की छाल में सुरंग बनाकर भोजन करते हैं। हमले के प्रारंभिक चरण में पत्तियाँ झड़ने लगती हैं और शीर्ष की शाखाएँ सूख जाती हैं। यदि मुख्य तने को नुकसान पहुँचता है, तो पूरा पेड़ मर सकता है।

नियंत्रण के उपाय

- नीलम एवं हुमायुद्दीन जैसी सहनशील आम की किस्में उगाएँ।
- पेड़ की मरी हुई एवं गंभीर रूप से संक्रमित शाखाओं को काटकर नष्ट करें।
- छंटाई करते समय तने के आधार पर चोट पहुँचाने से बचें।
- मोरिंगा (सहजन), सिल्क कॉटन (रुई) जैसे वैकल्पिक पौधों को आस-पास से हटा दें।
- गैर-मौसमी अवधि में प्रत्येक पेड़ के लिए 10 मिली मोनोक्रोटोफॉस 36 SL में भिगोया गया रूई का फाहा तने पर बाँधें, ध्यान रहे कि तने को अनावश्यक चोट न पहुँचे।
- सुई या लंबी तार से बोर छिद्रों से गुबरैलों को निकालें।

- बचे हुए छिद्रों में निम्न में से कोई एक भरें:

- DDVP @ 5 मिली

- मोनोक्रोटोफॉस 36 WSC @ 10-20 मिली

- 1 सेल्फोस गोली (3 ग्राम एल्युमिनियम फॉस्फाइड)

- कार्बोफ्यूथुरान 3G @ 5 ग्राम प्रति छेद

- फिर छेद को मिट्टी + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड पेस्ट से बंद कर दें।

तने की ढीली छाल को खुरचकर निचले 3 फीट हिस्से में कार्बारिल 50 WP @ 20 ग्राम/लीटर पानी से लेप करें, ताकि वयस्क भृंग अंडे न दे सकें।

तना छेदक भृंग (Stem borer)

लार्वा (ग्रब) शाखाओं और मुख्य तने की छाल में सुरंग बनाकर भोजन करते हैं। प्रारंभिक संक्रमण में पत्ते झड़ने लगते हैं और शीर्ष कोणले सूख जाती हैं। यदि मुख्य तना

क्षतिग्रस्त हो जाए तो पूरा पेड़ सूख सकता है। इस किट द्वारा अंडे पेड़ की छाल या दरारों में एकल रूप में दिए जाते हैं। इस किट के ग्रब पीले रंग के होते हैं साथ ही इस किट की लार्वा अवस्था लगभग 6 महीने तक रहती है।

तने छेदक नियंत्रण के उपाय

- सहनीय किस्मों का चयन करें जैसे - नीलम, हुमायुद्दीन।
- संक्रमित एवं मृत शाखाओं को काटकर नष्ट करें।
- छंटाई करते समय तने के निचले हिस्से में चोट से बचें।
- आसपास मौजूद मोरिंगा, सेमल (सिल्क कॉटन) जैसे वैकल्पिक होस्ट पौधों को हटाएँ।
- ऑफ सीजन में, तने पर बिना नुकसान पहुँचाए 10 मिली मोनोक्रोटोफॉस 36 SL में भिगोई हुई रूई का पैड लगाएं।
- बोर होल से लंबी सुई या तार की मदद से लार्वा को बाहर निकालें।
- बोर होल में नीचे दिए गए रसायनों में से कोई एक भरें और मिट्टी + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड पेस्ट से सील करें।
- DDVP @ 5 मि.ली., मोनोक्रोटोफॉस 36 WSC @ 10-20 मि.ली., सेल्फॉस टैबलेट (3 ग्राम एल्युमिनियम फॉस्फाइड), कार्बोफ्यूथुरान 3G @ 5 ग्राम प्रति छेद।
- छाल के ढीले हिस्से को खुरचकर तने के निचले 3 फीट हिस्से पर कोलतार + केरोसिन (1:2) या कार्बारिल 50 WP @ 20 ग्राम/लीटर का लेप करें ताकि वयस्क कीट अंडे न दे सकें।



आलू की फसल को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले इस रोग की ऐसे रोकथाम करें

रबी सीजन की फसलों की बिजाई किसानों द्वारा संपन्न की जा चुकी है। साथ ही, सर्दियों ने भी अपनी दस्तक दे दी है। फिलहाल, मौसमिक बदलाव और कोहरा की वजह से तापमान में उतार-चढ़ाव और उच्च सापेक्षिक आर्द्रता की स्थिति सामने आ रही है, जिसके चलते कृषकों के खेत में लगे आलू की फसल में पिछाता झुलसा और अगात झुलसा रोग के संक्रमण की आशंका भी बढ़ चुकी है। यह दोनों ही रोग आलू की फसल को बेहद हानि पहुंचाते हैं। यदि किसान वक्त रहते अपनी आलू की फसल को झुलसा रोग से बचाने के निम्नलिखित चीजों का ध्यान रखते हैं, तो वह इससे काफी अच्छा मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। आगे इस लेख में हम जानेंगे इन रोगों की पहचान और प्रबंधन के बारे में।

पिछाता झुलसा रोग की पहचान

इस रोग में आलू की पत्तियां किनारों से सूखने लग जाती

हैं। सूखे हुए हिस्से को उंगलियों से रगड़ने पर खरखराहट की आवाज आती है।

यह रोग मुख्य रूप से उस समय फैलता है, जब वायुमंडलीय तापमान 10°C से 19°C के मध्य होता है। इसको किसान भाई 'आफत' कहते हैं।

प्रबंधन

- दिसंबर के अंत में एक बार सुरक्षात्मक छिड़काव करें।
- 10-15 दिन के अंतराल पर 400-500 लीटर पानी में घोल बनाकर निम्नलिखित में से कोई एक छिड़काव करें।
- मैकोजेब 75% घुलनशील पाउडर (2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)
- जिनेब 75% घुलनशील पाउडर (2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)

यदि फसल संक्रमित हो गई हो तो निम्नलिखित दवाओं का छिड़काव करें:

- मेटालैक्सिल 8% + मैकोजेब 64% (2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)
- कार्बेन्डाज़िम 12% + मैकोजेब 63% (1.75 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)

अगात झुलसा रोग की पहचान

इस रोग में पत्तियों पर भूरे रंग के गोल धब्बे लग जाते हैं, जो कि आहिस्ते-आहिस्ते बढ़कर पत्तियों को जला देते हैं। यह रोग सामान्य रूप से जनवरी के दूसरे या तीसरे सप्ताह में दिखाई पड़ता है।

प्रबंधन

अगात झुलसा रोग के प्रबंधन हेतु जिनेब 75% घुलनशील पाउडर (2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर), मैकोजेब 75% घुलनशील पाउडर (2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर), कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% घुलनशील पाउडर (2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर), कैप्टान 75% घुलनशील पाउडर (2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर), जैसे

ही रोग के लक्षण नजर आने लगें, शीघ्र ही छिड़काव करें। जानकारी के लिए बता दें कि 400-500 लीटर पानी में निम्नलिखित में से किसी एक का घोल बनाकर छिड़काव करें।

कृषकों के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं?

किसान भाई फसल की नियमित तौर पर निगरानी करें, जिससे कि शुरुआती लक्षण दिखते ही उपाय किए जा सकें। साथ ही, छिड़काव के लिए सही दवाइयों और उनकी मात्रा का खास रूप से ध्यान रखें। सिर्फ इतना ही नहीं छिड़काव के दौरान मौसम साफ सुथरा और शांत होना चाहिए।

किसी भी रोगिक समस्या के लिए किसान यहां संपर्क कर सकते हैं

अगर किसी भी किसान भाई को आलू के फसलीय रोग प्रबंधन या किसी भी समस्या हेतु ज्यादा जानकारी प्राप्त करनी हो तो किसान कॉल सेंटर (टोल-फ्री नंबर: 18001801551) पर बेझिझक संपर्क कर सकते हैं।

इसके अलावा कृषक अपने जनपद के सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण से भी मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।



मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति: 40

एचपी श्रेणी में एक दमदार ट्रैक्टर

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति बेहतरीन माइलेज और हाई परफॉर्मेंस वाला लोकप्रिय ट्रैक्टर

जैसे की आप जानते है मैसी ट्रैक्टर कंपनी शुरू से ही किसानो के लिए नए फीचर्स के साथ ट्रैक्टर्स लॉन्च करती रहती है। और किसान भी मैसी के ट्रैक्टर्स को लाना पसंद करते है। मैसी के ट्रैक्टर्स की खिचाई बहुत अच्छी होती है। ये ट्रैक्टर खेती में अच्छी माइलेज देता है। मैसी के ट्रैक्टर कल्टीवेटर, हैरो और रोटोवेटर जैसे उपकरणों को चलाने में बहुत अच्छा प्रदर्शन करता है। इसी कारण से मैसी के ट्रैक्टर किसानो को पसंद आते है। इसी के चलते मैसी ने नया ट्रैक्टर मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति लॉन्च किया है ये ट्रैक्टर अच्छी इंजन क्षमता के साथ आता है।

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति ट्रैक्टर इंजन क्षमता

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति में SIMPSONS S337 T III का इंजन है जो 40 hp इंजन क्षमता के साथ आता है और इसमें 3 सिलिंडर है। ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 2400 CC की दी गयी है। इस ट्रैक्टर में आपको ड्राई टाइप एयर क्लीनर मिल जाता है। इस ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम मिलता है। ट्रैक्टर में कंपनी ने 33.2 HP का पीटीओ दिया है।

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

ट्रान्समिशन और क्लच

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति में 8 फॉरवर्ड+ 2 रिवर्स गियर गियरबॉक्स में आपको मिल जाते है।

ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश / पार्शियल कांस्टेंट मेश टाइप का ट्रांसमिशन आपको मिल जाता है। इस ट्रैक्टर से सभी प्रकार के कार्य आसानी से किए जा सकते हैं। गियरबॉक्स और ट्रांसमिशन अच्छा होने से ट्रैक्टर में अच्छी गति मिलती है और कार्य भी आसानी से किया जा सकता है। ट्रैक्टर की आगे चलने की गति 30.2 किलोमीटर प्रति घंटे है।

ब्रेक और स्टीयरिंग

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति ट्रैक्टर में कंपनी ने ड्राई डिस्क ब्रेक्स (Dura ब्रेक्स) आपको मिल जाते हैं। जिससे की ट्रैक्टर को हर स्थिति में नियंत्रित किया जा सकता है। ट्रैक्टर में आपको मैकेनिकल/पावर स्टीयरिंग (ऑप्शनल) में मिल जाता है। पावर स्टीयरिंग ट्रैक्टर में होने से इस ट्रैक्टर को मोड़ना आसान हो जाता है। कम स्थान में भी ट्रैक्टर को आसानी से मोड़ा जा सकता है।

टायर साइज

ट्रैक्टर के आगे के टायर 6.00 x 16 (15.24 cm x 40.64 cm) आते हैं और पीछे के टायर 12.4 x 28 (31.49 cm x 71.12 cm) और 13.6 x 28 (34.54 cm x 71.12 cm) में उपलब्ध है आपको जो पसंद हो आप वैसे टायर के साथ ट्रैक्टर खरीद सकते हैं।

हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी

तीन-बिंदु लिंकेज नियंत्रण के साथ आता है जो ड्राफ्ट, स्थिति और प्रतिक्रिया नियंत्रण करता है। ये तीनों चीजे CAT-1 (कॉम्बी बॉल) से जुड़े हुए होते हैं। ट्रैक्टर की लिफ्टिंग हाइड्रोलिक्स उठाने की क्षमता 1300 किलोग्राम है। ट्रैक्टर फ्रंट बंपर के साथ आता है।

पीटीओ नियंत्रण

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति ट्रैक्टर का पीटीओ प्रकार लाइव, सिंगल-स्पीड पीटीओ है और पीटीओ स्पीड 540 आरपीएम ये स्पीड 1500 ईआरपीएम पर मिलती है।

डायमेंशन, वेट एंड ईंधन टैंक

ट्रैक्टर की कुल लंबाई 3340 mm, कुल चौड़ाई 1715 mm और कुल ऊंचाई 345 mm ट्रैक्टर का व्हीलबेस 1785 mm का आता है। मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति ट्रैक्टर का कुल वजन 1300 किलोग्राम है। ट्रैक्टर के ईंधन टैंक क्षमता की क्षमता 47 लीटर है। जिससे हम लम्बे समय तक खेत में काम कर सकते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति की कीमत कितनी है?

मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महाशक्ति ट्रैक्टर की कीमत की हम बात करें तो ये आपको 6.26- 6.52 लाख तक की बाजार कीमत तक मिलेगा। अलग-अलग राज्य में इसकी कीमत में थोड़ा फरक भी देखा जा सकता है। ट्रैक्टर की कीमत किसानों के बजट के आधार पर निर्धारित की गयी है।

क्यों किसान खरीदें मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति ट्रैक्टर?

ऊपर दिए गए सभी फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति 40 एचपी श्रेणी में किसानों के लिए एक भरोसेमंद, दमदार और किफायती विकल्प है। इसके मजबूत इंजन, बेहतर खिंचाई, कम ईंधन खपत और उच्च प्रदर्शन क्षमता इसे हर तरह की खेती के लिए उपयुक्त बनाते हैं। यह ट्रैक्टर न सिर्फ कल्टीवेटर, हैरो, रोटावेटर जैसे भारी औजार आसानी से चलाता है, बल्कि इसकी 1300 किलो लिफ्टिंग क्षमता, स्मूद गियरबॉक्स, ड्यूरा ब्रेक्स और तगड़ी PTO पावर खेत में तेज और कुशल कार्य सुनिश्चित करते हैं। साथ ही, इसका कम रखरखाव, फ्यूल-एफिशिएंट इंजन, आरामदायक स्टीयरिंग विकल्प, और किफायती कीमत इसे छोटे व मध्यम किसानों के लिए एक परफेक्ट चुनाव बनाते हैं। अगर किसान एक ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं जो मजबूत, टिकाऊ, कम खर्चीला और हर कृषि कार्य में

भरोसेमंद प्रदर्शन दे, तो मैसी फर्ग्यूसन 1035 DI महा शक्ति एक अत्यंत सही और लाभदायक विकल्प सिद्ध होता है।

जॉन डियर 5310
55 एचपी श्रेणी में दमदार और किफायती ट्रैक्टर



जॉन डियर 5310: 55 एचपी श्रेणी में दमदार और किफायती ट्रैक्टर

जानें, जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

भारतीय कृषि क्षेत्र में ट्रैक्टर केवल एक मशीन नहीं, बल्कि किसान की मेहनत और उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण साथी होता है। खेत की जुताई से लेकर बुवाई, ढुलाई और भारी कृषि उपकरणों के संचालन तक, हर कार्य में ट्रैक्टर की भूमिका अत्यंत अहम है। इसी आवश्यकता को समझते हुए जॉन डियर ट्रैक्टर कंपनी वर्षों से किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता, मजबूत और भरोसेमंद ट्रैक्टरों का निर्माण कर रही है। जॉन डियर के ट्रैक्टर कम ईंधन खपत, दमदार इंजन, लंबी उम्र और बेहतर प्रदर्शन के लिए किसानों के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

कंपनी समय-समय पर किसानों की बदलती जरूरतों और आधुनिक खेती की मांग को ध्यान में रखते हुए नए-नए ट्रैक्टर मॉडल बाजार में उतारती रहती है। इसी कड़ी में जॉन डियर ने मध्यम से बड़े किसानों के लिए

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की इंजन क्षमता

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर एक शक्तिशाली 55 हॉर्सपावर (HP) श्रेणी का ट्रैक्टर है, जो बड़े और भारी कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसमें 3 सिलेंडर वाला दमदार इंजन दिया गया है, जो 2400 RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। यह इंजन न केवल ताकतवर है, बल्कि ईंधन की खपत के मामले में भी किफायती माना जाता है, जिससे किसानों की ऑपरेटिंग लागत कम होती है। इंजन में बेहतर परफॉर्मेंस और लंबी उम्र सुनिश्चित करने के लिए ड्राई टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो धूल-मिट्टी वाले खेतों में भी इंजन को सुरक्षित रखता है। यह इंजन भारी जुताई, रोटोवेटर, कल्टीवेटर, थ्रेशर और ट्रॉली जैसे उपकरणों के साथ आसानी से कार्य करता है।

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषताएं

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर को कंपनी ने आधुनिक ट्रांसमिशन सिस्टम और बेहतर नियंत्रण के साथ तैयार किया है। इस ट्रैक्टर में किसानों को Single और Dual Clutch दोनों का विकल्प मिलता है, जिससे अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार ट्रैक्टर का चयन किया जा सकता है। ट्रैक्टर में कुल 16 गियर दिए गए हैं, जिनमें 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर शामिल हैं। यह गियरबॉक्स Collarshift ट्रांसमिशन के साथ आता है, जो खेत और सड़क दोनों पर स्मूद और बेहतर ड्राइविंग अनुभव प्रदान करता है। गियरों की यह विस्तृत रेंज ट्रैक्टर को हर प्रकार की गति और कार्य के लिए उपयुक्त बनाती है।

जॉन डियर 5310: गति, ब्रेक और नियंत्रण प्रणाली

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 2.6 से 31.9 किलोमीटर प्रति घंटा तक है, जबकि इसकी रिवर्स स्पीड भी 3.8 से 24.5 किलोमीटर प्रति घंटा तक जाती है। यह गति सीमा खेतों में सटीक काम

लगे हटके करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी

50 HP श्रेणी



करने और सड़क पर तेज परिवहन दोनों के लिए लाभदायक है। सुरक्षा और बेहतर नियंत्रण के लिए ट्रैक्टर में Oil Immersed Disc Brakes (तेल में डूबे डिस्क ब्रेक) दिए गए हैं, जो गीली और फिसलन भरी जमीन पर भी मजबूत ब्रेकिंग प्रदान करते हैं और ट्रैक्टर को सुरक्षित रूप से रोकने में मदद करते हैं।

जॉन डियर 5310: टायर, ईंधन टैंक और हाइड्रोलिक क्षमता

ट्रैक्टर के टायरों की बात करें तो इसमें आगे की ओर 6.50 x 20 साइज के टायर और पीछे की ओर 16.9 x 30 साइज के बड़े और मजबूत टायर दिए गए हैं, जो खेत में बेहतरीन पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर में 68 लीटर की बड़ी ईंधन टैंक क्षमता दी गई है, जिससे किसान एक बार टैंक भरवाने के बाद लंबे समय तक बिना रुके काम कर सकते हैं। यह विशेषता लंबे कृषि कार्यों के दौरान समय और ईंधन दोनों की बचत करती है। हाइड्रोलिक सिस्टम की बात करें तो इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 2000 किलोग्राम है, जो भारी कृषि उपकरणों को उठाने और संचालित करने के लिए पर्याप्त है। इसमें Category-II तीन बिंदु लिंकेज सिस्टम के साथ Automatic Depth और Draft Control भी दिया गया है, जिससे उपकरणों की गहराई और नियंत्रण बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

जॉन डियर 5310: PTO, वजन और आयाम

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर में Independent PTO दिया गया है, जिसमें 6 Splines Shaft मौजूद है। इस ट्रैक्टर में किसानों को दो प्रकार के PTO विकल्प – Standard और Economy मिलते हैं। Standard PTO 540 @ 2376 ERPM पर कार्य करता है, जिससे ईंधन की बचत के साथ हल्के कार्य किए जा सकते हैं। ट्रैक्टर का कुल वजन 2000 किलोग्राम है, जो इसे स्थिरता और मजबूती प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस 2050 MM का है, जिससे ट्रैक्टर संतुलित और सुरक्षित रहता है। ट्रैक्टर की लंबाई

3535 MM और चौड़ाई 1850 MM है, जबकि इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 435 MM है, जो ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी ट्रैक्टर को आसानी से चलने में मदद करता है। ट्रैक्टर का Turning Radius (ब्रेक के साथ) 3150 MM है, जिससे कम जगह में भी ट्रैक्टर को आसानी से मोड़ा जा सकता है।

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की कीमत

अगर कीमत की बात करें तो जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 11.76 लाख से 12.23 लाख रुपये के बीच होती है। हालांकि, यह कीमत राज्य, जिले, आरटीओ टैक्स और डीलरशिप के अनुसार थोड़ी बहुत अलग-अलग हो सकती है। सटीक कीमत जानने के लिए नजदीकी जॉन डियर डीलर से संपर्क करना बेहतर रहता है।

कुल मिलाकर, जॉन डियर 5310 एक शक्तिशाली, भरोसेमंद और आधुनिक फीचर्स से लैस ट्रैक्टर है, जो बड़े और मध्यम किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है। इसकी दमदार 55 एचपी इंजन क्षमता, उच्च हाइड्रोलिक लिफ्टिंग पावर, बेहतर PTO विकल्प, मजबूत ब्रेकिंग सिस्टम और बड़ी ईंधन टैंक क्षमता इसे खेती और व्यावसायिक दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त बनाती है।

अगर आप ऐसा ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं जो कम ईंधन में ज्यादा काम करे, लंबे समय तक टिकाऊ रहे और हर प्रकार के कृषि कार्यों में आपका भरोसेमंद साथी बने, तो जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर निश्चित रूप से आपके लिए एक सही और समझदारी भरा विकल्प हो सकता है।



स्वराज के टॉप 3 ट्रैक्टर - जानें, ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

स्वराज के टॉप 3 बेस्ट ट्रैक्टर मॉडल

स्वराज ट्रैक्टर कंपनी, जिसे महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के स्वामित्व में संचालित किया जाता है, भारतीय किसानों के बीच एक प्रतिष्ठित नाम है। स्वराज ट्रैक्टर विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों के लिए अपनी उच्च गुणवत्ता, विश्वसनीयता और प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। यहाँ स्वराज के टॉप 3 ट्रैक्टर मॉडलों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है।

स्वराज 855 एफई

स्वराज 855 एफई एक 55 एचपी श्रेणी का शक्तिशाली ट्रैक्टर है। इस ट्रैक्टर में आपको 3 सिलेंडर मिलते हैं जो लंबे समय तक बेहतर कामकाज के लिए बनाए गए हैं। इस ट्रैक्टर में कंपनी ने नया इंजन दिया है जो की कम डीज़ल की खपत करता है। इसके साथ ही, स्वराज 855 में 3478 सीसी इंजन है जो भारतीय किसानों के लिए इस ट्रैक्टर को अच्छा बनाता है। स्वराज ट्रैक्टर 855 में एक ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर और वाटर कूल्ड इंजन भी है जो ट्रैक्टर को खेत में चलाते समय चिकनाई प्रदान करता है। स्वराज ट्रैक्टर 855 पीटीओ एचपी 42.9 एचपी है। इस ट्रैक्टर में गियरबॉक्स

ट्रांसमिशन टाइप कांस्टेंट मैश व स्लाइडिंग का कॉम्बिनेशन दिया गया है। इस में अब बदलाव करके 12 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर्स की स्पीड दी गयी का ज्यादा स्पीड विकल्प होने से किसानों को ट्रैक्टर से लूट में काम करने में आसानी होगी। इस ट्रैक्टर में कंपनी पावर स्टीयरिंग प्रदान करती है। ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2000 किलोग्राम है। ट्रैक्टर की कीमत 8.46 - 8.81 लाख रूपए तक है। कीमत में कई स्थानों पर फरक भी देखने को मिलता है।

स्वराज 744 एक्स टी

इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करते हैं तो इस ट्रैक्टर में आपको 50 HP का इंजन मिलता है जो की 3 सिलेंडर के साथ आता है। 3478 cc क्यूबिक कैपेसिटी का इंजन ट्रैक्टर में आपको मिलता है। जो की 2000 रेटेड आरपीएम उत्पन्न करता है। स्वराज एक्सटी 744 में 3-स्टेज वेट एयर क्लीनर है जो ट्रैक्टर के आंतरिक सिस्टम को साफ रखता है, विस्तारित घंटों के दौरान प्रदर्शन बढ़ाता है। ट्रैक्टर में ट्रांसमिशन स्लाइडिंग मैश/पीसीएम संयोजन से बना हुआ दिया गया है। गियर levers की बात करे तो

ट्रैक्टर में सेण्टर में गियर levers मिलते हैं। ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर्स आपको मिलते हैं। ट्रैक्टर में कंपनी ने सिंगल क्लच / डब्लू क्लच / आईपीटीओ (ऑप्शनल) में दिया है। इस 2डब्ल्यूडी ट्रैक्टर में 6.0 X 16 / 7.50 X 16 फ्रंट टायर और 14.9 X 28 रियर टायर साइज में बेहतरीन टायर उपलब्ध हैं। Swaraj 744 XT ट्रैक्टर की भारत में कीमत 7.52-7.82 लाख तक है। हर सीमांत किसान इस ट्रैक्टर को आसानी से खरीद सकता है।

स्वराज 735 एफई

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर में इंजन की पावर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 40 hp का इंजन मिलता है और ट्रैक्टर के इंजन में कंपनी ने 3 सिलेंडर प्रदान किये हैं। ट्रैक्टर का इंजन 1800 आरपीएम बनाता है। ट्रैक्टर में Air Cleaner 3- Stage Oil Bath टाइप को आपको मिलता है। ट्रैक्टर में इंजन को ठंडा रखने के लिए Cooling सिस्टम वाटर कूल्ड बिना loss टैंक के दिया गया है। ट्रैक्टर में गियर्स की बात करें तो ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियरबॉक्स कंपनी प्रदान करती है। SWARAJ 735 FE ट्रैक्टर में उच्च-प्रदर्शन PTO Hp सभी संलग्न उपकरणों की निर्बाध हैंडलिंग सुनिश्चित करता है। ट्रैक्टर का पीटीओ 32.6 hp पावर का दिया गया है। स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर में वजन उठाने की क्षमता 1650 किलोग्राम है, लिंकेज 3 पॉइंट लिंकेज श्रेणी- I और II प्रकार के इम्प्लीमेंट पिन के लिए उपयुक्त है। इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 x 16 के और रियर टायर 13.6 x 28 के आपको इस ट्रैक्टर में मिलते हैं। इस ट्रैक्टर की कीमत 6.26 लाख - 6.51 लाख रूपए तक है। इस ट्रैक्टर की कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है। स्वराज के ये टॉप 3 ट्रैक्टर—स्वराज 855 FE, स्वराज 744 XT, और स्वराज 735 FE—भारतीय किसानों की विविध कृषि जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। ये ट्रैक्टर न सिर्फ मजबूत इंजन, बेहतरीन माइलेज और उच्च लिफ्टिंग क्षमता प्रदान करते हैं, बल्कि अलग-अलग खेती के कामों जैसे जुताई, सिंचाई, बुवाई, ढुलाई और हैवी-ड्यूटी संचालन में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन देते हैं।



सॉलिस के टॉप 3 ट्रैक्टर - जानें, ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

2025 में खरीदें ये 3 सबसे ज्यादा बिकने वाले सॉलिस ट्रैक्टर

सॉलिस यानमार ने किसानों के लिए कृषि मशीनीकरण के विकास को बढ़ावा देने और नई तकनीकों को बनाने का कार्य संभाला है। सोलिस ट्रैक्टर के मालिक हैं श्री एल.डी. मित्तल जो आईटीएल समूह के संस्थापक और अध्यक्ष भी हैं। सोलिस ब्रांड 'ग्लोबल 4 व्हील ड्राइव ट्रैक्टर विशेषज्ञ' के रूप में जानी जाती हैं, इसका कारण यह है की सोलिस ट्रैक्टर रेंज उन्नत 4 डब्ल्यूडी तकनीक से लैस है जो की ट्रांसमिशन गति प्रदान करते हैं जिससे की किसानों को उच्च उत्पादन में आसानी होती है। आज के इस लेख में हम आपको सॉलिस के टॉप 3 ट्रैक्टर के बारे में जानकारी देंगे।

सॉलिस 4015 E

सॉलिस 4015 E ट्रैक्टर में इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में सोनालिका कंपनी 4 स्टॉक वाटर कूल इंजन ट्रैक्टर में आता है। इंजन 3 सिलिंडर के साथ



सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर: 50 एचपी श्रेणी में बेहतरीन और भरोसेमंद ट्रैक्टर

भारतीय कृषि क्षेत्र में सोनालीका ट्रैक्टर एक जाना-माना और भरोसेमंद नाम है। कंपनी समय-समय पर किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नए और उन्नत फीचर्स वाले ट्रैक्टर लॉन्च करती रहती है। इसी कड़ी में सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर 50 HP श्रेणी में एक बेहतरीन और संतुलित विकल्प के रूप में सामने आया है। यह ट्रैक्टर खास तौर पर उन किसानों के लिए डिजाइन किया गया है, जो कम डीज़ल खपत में ज्यादा पावर, मजबूत बनावट और मल्टी-पर्पस उपयोग चाहते हैं। शक्तिशाली 3-सिलेंडर 50 HP इंजन से लैस यह ट्रैक्टर 1900 RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन और बेहतर उत्पादकता प्रदान करता है, जिससे खेती और ढुलाई दोनों कार्य आसानी से पूरे किए जा सकते हैं।

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर की इंजन विशेषताएँ

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर में कंपनी ने बड़ा और शक्तिशाली इंजन दिया है, जो खेतों में भारी कृषि उपकरण चलाने और सड़क पर ट्रॉली ढुलाई के लिए पर्याप्त ताकत देता है।

- इस ट्रैक्टर में 50 HP श्रेणी का इंजन मिलता है

- इंजन 3 सिलेंडर के साथ आता है
- इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 3065 cc है

यह इंजन 1900 RPM पर बेहतरीन प्रदर्शन करता है, जिससे ट्रैक्टर लंबे समय तक लगातार काम कर सकता है। ईंधन की बेहतर बचत और सटीक फ्यूल सप्लाई के लिए इसमें BOSCH कंपनी का Inline Fuel Injection Pump दिया गया है, जो इंजन की पावर और माइलेज दोनों को संतुलित रखता है। इस दमदार इंजन की मदद से किसान कम समय में ज्यादा काम कर पाते हैं, जिससे लागत घटती है और मुनाफा बढ़ता है।

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर के मुख्य फीचर्स

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर Power Plus को खास तौर पर किसानों की उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है। इस ट्रैक्टर में हेवी-ड्यूटी कॉन्स्टेंट मेश टाइप ट्रांसमिशन दिया गया है, जो कठिन परिस्थितियों में भी स्मूद और भरोसेमंद परफॉर्मेंस देता है।

- गियरबॉक्स विकल्प: 8 Forward + 2 Reverse
- क्लच विकल्प: Single Clutch / Dual Clutch

स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें Mechanical Steering Power Steering (वैकल्पिक) का विकल्प मिलता है, जिससे खेतों में ट्रैक्टर को नियंत्रित करना आसान हो जाता है। ड्राइवर की सुविधा के लिए ट्रैक्टर में एर्गोनोमिक सीट दी गई है, जो लंबे समय तक काम करने पर भी थकान कम करती है।

ब्रेक, टायर और नियंत्रण प्रणाली

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग, ज्यादा सुरक्षा और लंबी उम्र प्रदान करते हैं। यह फीचर खासकर ढुलाई और ऊबड़-खाबड़ खेतों में काम करते समय काफी फायदेमंद साबित होता है।

टायर साइज

इस ट्रैक्टर में अलग-अलग जरूरतों के अनुसार टायर विकल्प मिलते हैं:

- फ्रंट टायर: 6.0 × 16 / 7.50 × 16
- रियर टायर: 13.6 × 28 / 14.9 × 28

ये टायर खेत में बेहतर ग्रीप, संतुलन और ट्रैक्शन प्रदान करते हैं।

हाइड्रोलिक सिस्टम और लिफ्टिंग क्षमता

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर में सटीक और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है, जिससे कृषि उपकरणों को आसानी से ऊपर-नीचे किया जा सकता है।

लिफ्टिंग कैपेसिटी: 1800 किलोग्राम

यह ट्रैक्टर हल, कल्टीवेटर, रोटोवेटर, वेटलैंड कल्टीवेशन, बुवाई मशीन, थ्रेशर, आलू प्लांटर, ट्रॉली ढुलाई, मल्चर, स्ट्रॉ रीपर और सुपर सीडर जैसे अनेक कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त है।

यह आधुनिक तकनीक से लैस ट्रैक्टर भारत की फसल और मिट्टी की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है, जिससे किसानों को बेहतर उत्पादन और अधिक आय प्राप्त करने में मदद मिलती है।

सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर की कीमत

यदि कीमत की बात करें तो सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹6.88 लाख से ₹7.16 लाख के बीच रखी गई है। हालांकि, अलग-अलग राज्यों, जिलों और डीलर चार्ज के कारण कीमत में थोड़ा अंतर देखने को मिल सकता है। अगर आप 50 HP श्रेणी में एक शक्तिशाली, फ्यूल-एफिशिएंट और मल्टी-पर्पस ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो सोनालीका 745 डीआई III सिकंदर आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प है। इसका मजबूत इंजन, उन्नत ट्रांसमिशन, उच्च लिफ्टिंग क्षमता और कम डीज़ल खपत इसे भारतीय किसानों के लिए एक भरोसेमंद ट्रैक्टर बनाती है।



स्वराज 735 एफई: 40 एचपी कैटेगिरी में सबसे लोकप्रिय ट्रैक्टर

जानें, स्वराज 735 एफई, 40 एचपी ट्रैक्टर की फीचर्स, कीमत और लाभ

भारतीय किसानों के बीच स्वराज ट्रैक्टर एक भरोसेमंद नाम है। मजबूती, कम रख-रखाव और शानदार माइलेज के कारण स्वराज के ट्रैक्टर वर्षों से किसानों की पहली पसंद बने हुए हैं। कंपनी समय-समय पर किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नए और उन्नत फीचर्स के साथ ट्रैक्टर लॉन्च करती रहती है। इसी कड़ी में स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर को पेश किया गया है, जो 35-40 HP श्रेणी में सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले ट्रैक्टरों में से एक है। यहां FE का मतलब Fuel Efficient है, यानी यह ट्रैक्टर बेहतर माइलेज देने के लिए जाना जाता है। इस लेख के माध्यम से हम आपको स्वराज 735 FE ट्रैक्टर के इंजन, फीचर्स, तकनीकी विवरण और कीमत के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर की इंजन क्षमता

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर में 35-40 हॉर्सपावर की श्रेणी का दमदार 3-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो खेती से जुड़े हर छोटे-बड़े कार्य को आसानी से पूरा करने में सक्षम है। इस ट्रैक्टर का इंजन डिस्प्लेसमेंट

2734 cc है, जो बेहतर पावर और लंबे समय तक लगातार काम करने की क्षमता प्रदान करता है। इंजन 1800 RPM पर अच्छा प्रदर्शन करता है, जिससे ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, थ्रेशर और ट्रॉली जैसे कार्यों में संतुलित शक्ति देता है। इंजन की सुरक्षा के लिए इसमें 3-स्टेज ऑयल बाथ एयर क्लीनर दिया गया है, जो धूल-मिट्टी से इंजन को सुरक्षित रखता है। इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें वॉटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, साथ ही बिना लॉस टैंक (Bira Loss Tank) की सुविधा भी मिलती है, जिससे इंजन अधिक समय तक बिना ओवरहीट हुए काम करता है।

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर के मुख्य फीचर्स

स्वराज 735 FE ट्रैक्टर में किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कई उपयोगी फीचर्स दिए गए हैं। इस ट्रैक्टर में क्लच के दो विकल्प मिलते हैं — सिंगल क्लच और डबल क्लच, जिसे किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार चुन सकते हैं। इसमें सिंगल ड्राई डिस्क फ्रिक्शन क्लच प्लेट दी गई है, जिससे गियर बदलना आसान और स्मूद हो जाता है। गियर

सिस्टम की बात करें तो इसमें 8 फॉरवर्ड गियर और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो अलग-अलग खेती कार्यों के लिए उपयुक्त गति प्रदान करते हैं।

गति, ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम

स्वराज 735 FE ट्रैक्टर की आगे की गति 2.30 किमी/घंटा से 27.80 किमी/घंटा तक है, जबकि पीछे की गति 2.73 से 10.74 किमी/घंटा तक जाती है। यह रेंज खेत और सड़क दोनों परिस्थितियों में संतुलित प्रदर्शन देती है। ब्रेकिंग सिस्टम की बात करें तो इसमें स्टैंडर्ड ड्राई डिस्क ब्रेक दिए गए हैं। साथ ही कंपनी इसमें तेल में डूबे हुए ब्रेक (Oil Immersed Brakes) का विकल्प भी देती है, जो ज्यादा सुरक्षित और टिकाऊ होते हैं। स्टीयरिंग के लिए इसमें मैकेनिकल स्टीयरिंग दी गई है, जबकि पावर स्टीयरिंग विकल्प की मदद से कम जगह में भी ट्रैक्टर को आसानी से मोड़ा जा सकता है, जिससे ड्राइवर को थकान कम होती है।

PTO और हाइड्रोलिक क्षमता

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर में 32.6 HP की PTO पावर मिलती है, जो रोटोवेटर, थ्रेशर और अन्य PTO उपकरणों को चलाने के लिए पर्याप्त है। इसकी PTO स्पीड 540 RPM है, जो अधिकांश कृषि यंत्रों के साथ पूरी तरह अनुकूल है। हाइड्रोलिक क्षमता की बात करें तो इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1650 किलोग्राम है, जिससे यह भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठा सकता है।

टायर, साइज और ग्राउंड क्लीयरेंस

टायर साइज की बात करें तो इसमें आगे के टायर 6.00 × 16 और पीछे के टायर 13.6 × 28 दिए गए हैं, जो खेत में बेहतर पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। इस ट्रैक्टर की कुल लंबाई 3560 mm, चौड़ाई 1790 mm और व्हील बेस 1945 mm है। साथ ही इसमें 380 mm का ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है, जिससे ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी ट्रैक्टर आसानी से चलता है।

स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर की कीमत

यदि कीमत की बात करें तो स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹6.26 लाख से ₹6.51 लाख के बीच है। हालांकि, अलग-अलग राज्यों और जिलों में टैक्स, आरटीओ और डीलर चार्ज के कारण कीमत में थोड़ा अंतर देखने को मिल सकता है। स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर 35-40 HP कैटेगरी में उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है, जो कम ईंधन खपत, मजबूत बनावट और भरोसेमंद परफॉर्मेंस वाला ट्रैक्टर चाहते हैं। इसका दमदार इंजन, अच्छा माइलेज, संतुलित गियर सिस्टम और मजबूत हाइड्रोलिक क्षमता इसे जुताई, बुवाई, थ्रेशर चलाने और ट्रॉली ढुलाई जैसे सभी कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त बनाती है। साथ ही, पावर स्टीयरिंग और ऑयल इमर्सड ब्रेक जैसे विकल्प ट्रैक्टर को ज्यादा सुरक्षित और आरामदायक बनाते हैं। किफायती कीमत, कम रख-रखाव और स्वराज ब्रांड की विश्वसनीयता के कारण यह ट्रैक्टर छोटे और मध्यम किसानों के लिए लंबे समय तक फायदेमंद साबित होता है। अगर आप एक टिकाऊ, फ्यूल एफिशिएंट और बहुउपयोगी ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो स्वराज 735 एफई निश्चित रूप से आपकी खेती की जरूरतों पर खरा उतर सकता है।



असली ताक़त बेजोड़ काम ज़बरदस्त कमाई

EICHER 485

45 HP रेंज





स्वराज 834 एक्स एम vs महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस – कौनसा ट्रैक्टर है आपके खेत के लिए बेहतर?

जानिए, इन दोनों ट्रैक्टर मॉडल के इंजन, फीचर्स और कीमत

भारत में स्वराज और महिंद्रा ट्रैक्टर कंपनियों को किसानों के बीच एक भरोसेमंद पहचान हासिल है। दोनों ही ब्रांड कृषि क्षेत्र के लिए मजबूत, टिकाऊ और उपयोग में आसान ट्रैक्टर बनाते हैं। यदि आप अपने खेतों के लिए नया ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो स्वराज 834 एक्स एम और महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस के बीच तुलना समझना आपके लिए बेहद फायदेमंद हो सकता है। यहां हम इन दोनों ट्रैक्टरों की पावर, फीचर्स और कीमत के आधार पर पूरी जानकारी दे रहे हैं, ताकि आप सही निर्णय ले सकें।

इन ट्रैक्टरों की खासियत क्या है?

स्वराज 834 एक्स एम और महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस दोनों को ही खेती की हर तरह की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। इनका लुक आकर्षक है और तकनीकी रूप से ये

आधुनिक फीचर्स से लैस हैं। इनलाइन फ्यूल इंजेक्शन पंप, आंशिक स्थिर जाल (Partial Constant Mesh) ट्रांसमिशन और कम रखरखाव लागत जैसी खूबियां इन्हें किसानों के बीच काफी लोकप्रिय बनाती हैं। यही कारण है कि ये दोनों मॉडल रोजमर्रा की खेती के कामों में भरोसेमंद साबित होते हैं।

इंजन पावर और परफॉर्मेंस

स्वराज 834 एक्स एम एक 35 हॉर्सपावर का ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर और 2592 CC की इंजन क्षमता मिलती है। यह ट्रैक्टर 1800 RPM पर कार्य करता है और इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें वॉटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है। इसके साथ ही 3-स्टेज ऑयल बाथ टाइप एयर क्लीनिंग सिस्टम मौजूद है, जो इंजन की लंबी उम्र में मदद करता है।

वहीं महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस थोड़ा कम पावर के साथ आता है। इसका इंजन 33 HP का है और इसमें भी 3 सिलेंडर दिए गए हैं। इसकी इंजन

क्षमता 2048 CC है और यह 2000 RPM पर बेहतर प्रदर्शन देता है। इसमें भी वॉटर कूल्ड सिस्टम और 3-स्टेज ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन को धूल-मिट्टी से सुरक्षित रखता है।

PTO पावर और मशीनरी संचालन

PTO की बात करें तो स्वराज 834 एक्स एम में 29 HP का PTO मिलता है, जो लगभग 29.6 PTO HP जनरेट करता है। यह क्षमता रोटावेटर, कल्टीवेटर और अन्य कृषि उपकरणों को चलाने के लिए उपयुक्त मानी जाती है, जिससे खेत के काम आसानी से पूरे हो जाते हैं।

गियरबॉक्स, क्लच और ब्रेक सिस्टम

दोनों ट्रैक्टरों में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जिससे अलग-अलग परिस्थितियों में काम करना आसान होता है। स्वराज 834 एक्स एम में सिंगल ड्राई डिस्क फ्रिक्शन प्लेट क्लच मिलता है, जबकि महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस में Partial Constant Mesh टाइप ट्रांसमिशन दिया गया है। ब्रेकिंग सिस्टम की बात करें तो स्वराज 834 एक्स एम में ड्राई डिस्क ब्रेक्स के साथ ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स (OIB) का विकल्प मिलता है। वहीं महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स स्टैंडर्ड दिए गए हैं, जो बेहतर नियंत्रण और अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

स्टीयरिंग और हाइड्रोलिक क्षमता

महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस में मैनुअल स्टीयरिंग दी गई है और इसका हाइड्रोलिक सिस्टम काफी उन्नत माना जाता है। इसमें ड्राफ्ट, पोजीशन और रिस्रॉन्स कंट्रोल के साथ 3-पॉइंट लिंकेज मिलती है और इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1500 किलोग्राम तक है, जो भारी कृषि उपकरणों के लिए फायदेमंद है। दूसरी ओर स्वराज 834 एक्स एम की लिफ्टिंग क्षमता 1000 किलोग्राम है, जो सामान्य खेती के कार्यों के लिए पर्याप्त मानी जाती है और छोटे व मध्यम किसानों की जरूरतों को पूरा करती है।

टायर साइज और ग्रिप

दोनों ट्रैक्टरों में आगे की ओर 6.00 x 16 साइज के टायर दिए गए हैं। पीछे की ओर 12.4 x 28 या 13.6 x 28 (ऑप्शनल) टायर मिलते हैं। इन टायरों की वजह से ट्रैक्टर हर तरह की मिट्टी और खेती की परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

स्वराज 834 एक्स एम vs महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस कीमत की तुलना

स्वराज 834 एक्स एम की कीमत लगभग ₹5.65 लाख से ₹5.89 लाख के बीच होती है। वहीं महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस की कीमत ₹5.72 लाख से ₹6.20 लाख तक हो सकती है। हालांकि, ये कीमतें राज्य, डीलर और उपलब्ध सरकारी योजनाओं के अनुसार थोड़ी बहुत अलग हो सकती हैं।

अंतिम निष्कर्ष: कौन सा ट्रैक्टर चुनें?

यदि आप थोड़ी ज्यादा उठाने की क्षमता और बेहतर हाइड्रोलिक सिस्टम चाहते हैं, तो महिंद्रा 265 डीआई एक्सपी प्लस आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। वहीं अगर आप बजट में रहते हुए एक मजबूत, टिकाऊ और भरोसेमंद ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो स्वराज 834 एक्स एम भी एक शानदार चुनाव साबित हो सकता है।

खेती-किसानी, ट्रैक्टरों और कृषि उपकरणों से जुड़ी ऐसी ही उपयोगी जानकारी के लिए आप merikheti.com पर विजिट कर सकते हैं। इसके अलावा ट्रैक्टरों से जुड़े वीडियो देखने के लिए Merikheti YouTube Channel पर भी जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।



जॉन डियर के टॉप 3 सबसे दमदार 4 डब्ल्यूडी ट्रैक्टर



जॉन डियर के टॉप 3 सबसे दमदार 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

जॉन डियर के टॉप 3 4wd ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

भारत में जॉन डियर ट्रैक्टर अपनी मजबूती, भरोसेमंद प्रदर्शन और कम ईंधन खपत के लिए किसानों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। विशेष रूप से 4WD ट्रैक्टर भारी जुताई, गहरी खेती, रोटोवेटर, हार्वेस्टर और ट्रॉली जैसे कठिन कार्यों में बेहतरीन पकड़ और स्थिरता प्रदान करते हैं। जॉन डियर के 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर आधुनिक तकनीक, शक्तिशाली इंजन और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम के साथ आते हैं, जो छोटे से लेकर बड़े किसानों तक की जरूरतों को पूरा करते हैं। इस लेख में हम जॉन डियर के टॉप 3 सबसे दमदार 4WD ट्रैक्टर—5050 डी, 5310 और 5105—की कीमत और प्रमुख स्पेसिफिकेशन्स के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं, ताकि किसान अपनी खेती के अनुसार सही ट्रैक्टर का चयन कर सकें।

जॉन डियर 5050 डी - 4डब्ल्यूडी

अब यदि इस ट्रैक्टर के इंजन पावर की बात की जाए, तो जॉन डियर 5050 डी एक बेहद सक्षम 50 एचपी

के इंजन से लैस है, जो अपनी श्रेणी में पावर, माइलेज और स्थायित्व के बेहतरीन मिश्रण के रूप में जाना जाता है। इसका 2900 cc का बड़ा इंजन 2100 ERPM जनरेट करता है, जो ट्रैक्टर को लगातार भारी कार्य करने और लंबे समय तक बिना ओवरलोड हुए काम करने की क्षमता देता है। 3 सिलेंडर इंजन होने के बावजूद इसका प्रदर्शन बेहतरीन रहता है क्योंकि जॉन डियर ने अपने इंजनों में उच्च टॉर्क आउटपुट और फ्यूल एफिशिएंसी को प्राथमिकता दी है। इस मॉडल में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर का मजबूत गियरबॉक्स दिया गया है, जिसमें कॉलर शिफ्ट तकनीक का उपयोग किया गया है, जो गियर बदलने को बेहद आसान और स्मूद बनाती है। पीटीओ पावर इस ट्रैक्टर का एक और मजबूत पहलू है। जॉन डियर 5050 डी में 42.5 HP PTO पावर मिलती है, जो 6-स्लाइन इंडिपेंडेंट PTO के साथ आती है। यह ट्रैक्टर 1600 किलोग्राम की दमदार लिफ्टिंग क्षमता के साथ आता है। टायर साइज की बात करें तो जॉन डियर 5050 डी के फ्रंट टायर 8.00 x 18 के और रियर टायर

14.9 x 28 के आते हैं। इसके अलावा ऑप्शनल रूप में 7.50 x 16 फ्रंट और 16.9 x 28 रियर टायर भी उपलब्ध हैं, जो इसे अधिक ग्रिप और स्थिरता प्रदान करते हैं। जॉन डियर 5050 डी ट्रैक्टर लगभग 8.66 लाख से 9.02 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की कीमत पर उपलब्ध है।

जॉन डियर 5310 4डब्ल्यूडी

जॉन डियर 5310 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर एक शक्तिशाली 55 हॉर्सपावर (HP) श्रेणी का ट्रैक्टर है, जो बड़े और भारी कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसमें 3 सिलेंडर वाला दमदार इंजन दिया गया है, जो 2400 RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। यह इंजन न केवल ताकतवर है, बल्कि ईंधन की खपत के मामले में भी किफायती माना जाता है, जिससे किसानों की ऑपरेटिंग लागत कम होती है। ट्रैक्टर में कुल 16 गियर दिए गए हैं, जिनमें 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर शामिल हैं। यह गियरबॉक्स Collarshift ट्रांसमिशन के साथ आता है, जो खेत और सड़क दोनों पर स्मूद और बेहतर ड्राइविंग अनुभव प्रदान करता है। गियरों की यह विस्तृत रेंज ट्रैक्टर को हर प्रकार की गति और कार्य के लिए उपयुक्त बनाती है। इसमें आगे की ओर 9.5 x 24 साइज के टायर और पीछे की ओर 16.9 x 28 साइज के बड़े और मजबूत टायर दिए गए हैं, जो खेत में बेहतरीन पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। जॉन डियर 5310 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर में 68 लीटर की बड़ी ईंधन टैंक क्षमता दी गई है।

जॉन डियर 5105 4डब्ल्यूडी

जॉन डियर 5105 में 40 एचपी की इंजन क्षमता दी गई है। इसका 2900 cc का इंजन 2100 ERPM पर कार्य करता है। और इसमें 3 सिलेंडर लगाए गए हैं। इंजन में ड्यूल एलीमेंट वाला ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है। ट्रैक्टर 34.4 HP की PTO पावर प्रदान करता है। इंजन को ओवरहीटिंग से बचाने के लिए कूलेंट कूल्ड सिस्टम और ओवरफ्लो रिज़र्वायर कूलिंग व्यवस्था शामिल है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स

गियर वाला कॉलर शिफ्ट गियरबॉक्स दिया गया है, जो ट्रैक्टर को सुगमता से नियंत्रित करने में मदद करता है। इस ट्रैक्टर में ऑयल इम्मर्स्ड डिस्क ब्रेक्स लगाए गए हैं, इसकी मजबूत हाइड्रोलिक प्रणाली भारी से भारी उपकरणों को संभालने में सक्षम है, और इसकी 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता इसे विभिन्न हैवी-ड्यूटी टूल्स के साथ संगत बनाती है। जॉन डियर 5105 के टायर साइज भी इसकी कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। इसमें आगे की तरफ 8.00x18 टायर दिए गए हैं, जिनका विकल्प 7.50x16 भी उपलब्ध है। वहीं, पीछे की तरफ 13.6x28 टायर लगाए गए हैं, जिनका विकल्प 16.9x28 का आकार भी दिया जाता है। यदि आप एक ऐसा 4WD ट्रैक्टर तलाश रहे हैं जो शक्ति, टिकाऊपन और बेहतर माइलेज का संतुलन प्रदान करे, तो जॉन डियर के ये तीनों मॉडल अलग-अलग जरूरतों के अनुसार बेहतरीन विकल्प हैं। जॉन डियर 5050 डी 4WD मध्यम से भारी कृषि कार्यों के लिए संतुलित पावर और किफायती संचालन देता है, वहीं जॉन डियर 5310 4WD अधिक हॉर्सपावर, बड़े टायर और ज्यादा ईंधन क्षमता के साथ बड़े किसानों और हैवी-ड्यूटी कामों के लिए उपयुक्त है। दूसरी ओर, जॉन डियर 5105 4WD कम हॉर्सपावर श्रेणी में मजबूत हाइड्रोलिक क्षमता और भरोसेमंद प्रदर्शन के कारण छोटे व मध्यम किसानों के लिए अच्छा विकल्प बनता है। कुल मिलाकर, खेती के क्षेत्रफल, उपयोग किए जाने वाले औजारों और बजट को ध्यान में रखते हुए इन तीनों में से सही जॉन डियर 4WD ट्रैक्टर चुनकर किसान अपनी उत्पादकता और मुनाफा दोनों बढ़ा सकते हैं।



न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर: 45 एचपी श्रेणी में एक मजबूत और विश्वसनीय ट्रैक्टर

किसान भाइयों जैसा की आप जानते है भारत में न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर जानी मानी ट्रैक्टर बनाने वाली कंपनी है। ये कंपनी किसानों की ज़रूरत के हिसाब से ट्रैक्टरों का निर्माण करती है। न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर के ट्रैक्टर किसानों द्वारा बहुत पसंद भी किये जाते है। न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर वर्तमान में भारत में अत्याधुनिक तकनीक वाले 15 एचपी से 106 एचपी ट्रैक्टरों की श्रृंखला प्रदान करती है। यह भारत में पहली कंपनी थी जिसने फसलों की उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए भारतीय किसानों के लिए मशीनीकरण के समाधान के लिए सबसे उपयुक्त और उन्नत रेंज पेश की। समय समय पर कंपनी किसानों की जरूरत के हिसाब से नए ट्रैक्टर बनाती रहती है। न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर भी कंपनी ने किसानों की खेती को आसान बनाने के लिए बनाया है। हमारे इस लेख में आप इस ट्रैक्टर के फीचर्स के बारे में जानेंगे।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर इंजन पावर?

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर में इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 45 HP श्रेणी का इंजन

इस ट्रैक्टर में आपको मिलता है। ट्रैक्टर में कंपनी 3 सिलेंडर प्रदान करती है। ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 2500 cc है। न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर का इंजन 2200 RPM जरनेट करता है। ट्रैक्टर में कंपनी आयल बाथ टाइप विद प्री-क्लीनर प्रदान करती है। इस ट्रैक्टर के इंजन में आपको इनलाइन फ्यूल पंप मिलता है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर ट्रांसमिशन
ट्रैक्टर में आपको दो प्रकार के क्लच दिए गया है सिंगल और डबल न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर में ट्रांसमिशनफुल कांसटेंट मेश एफडी दिया गया है। इस ट्रैक्टर में आपको 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियरबॉक्स देखने को मिलते है। इस ट्रैक्टर में उत्तम दर्जे का ट्रांसमिशन आपको मिल जाता है जिससे की आप आसानी से सभी कार्य कर सकते है। ट्रैक्टर की फॉरवर्ड गति 2.5 – 30.81 किलोमीटर प्रति घंटे है और रिवर्स गति 3.11 – 11.30 किलोमीटर प्रति

घंटे है।

में कंपनी 46 लीटर का ईंधन टैंक प्रदान करती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर ब्रेक

इस ट्रैक्टर में आपको मल्टी डिस्क आयल इम्मरसेड ब्रेक मिलते हैं। ब्रेक अच्छे होने से ट्रैक्टर को किसी भी स्थान में आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर में मैकेनिकल/ पावर स्टीयरिंग (ऑप्शनल) मिलते हैं। पावर स्टीयरिंग का ऑप्शन चुनने से ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर टायर्स

ट्रैक्टर में टायर्स की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आगे के टायरों का आकर 6.0 x 16 है और पीछे के टायरों का आकर 13.6 x 28 कंपनी इस ट्रैक्टर में प्रदान करती है। इस ट्रैक्टर में ऑप्शनल में 6.50 X 16 के फ्रंट और 14.9 X 28 के रियर टायर आपको मिलते हैं। ट्रैक्टर के टायर ट्रैक्टर को हर परिस्थिति में आसानी से चने की अनुमति देते हैं।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर वजन उठाने की क्षमता

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर में वजन उठाने की क्षमता की बात करे तो इस ट्रैक्टर में 1800 किलोग्राम है और लिफ्टिंग के लिए ट्रैक्टर में 3 पॉइंट लिंकेज HP हाइड्रोलिक के साथ मल्टी सेंसिंग पॉइंट के साथ मिलते हैं। ऑटोमैटिक डेप्थ एंड ड्राफ्ट कंट्रोल, मिक्स्ड कंट्रोल, लिफ्ट- ओ-मैटिक, रिस्पॉन्स कंट्रोल, मल्टीपल सेंसिटिविटी कंट्रोल, आइसोलेटर वाल्व इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर बैटरी और ईंधन टैंक

इस ट्रैक्टर में कंपनी 75 Ah की बैटरी और 35 Amp का अल्टरनेटर प्रदान करती है। न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर में आपको पावर स्टीयरिंग और मैनुअल स्टीयरिंग दोनों ऑप्शन मिलते हैं। इस ट्रैक्टर

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर लंबाई-चौड़ाई और ट्रैक्टर का वजन

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर की कुल लंबाई 3330 mm है और ट्रैक्टर की चौड़ाई 1790 mm है। ट्रैक्टर में व्हील बेस 1900 mm का है। ट्रैक्टर का ग्राउंड क्लीयरेंस 395 mm का है। ट्रैक्टर का कुल वजन 1873 किलोग्राम है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर पीटीओ पावर

ट्रैक्टर में 41 hp PTO Power दी गयी है और 31 hp Drawbar पावर इस ट्रैक्टर में कंपनी प्रदान करती है। लाइव सिंगल स्पीड पी.टी.ओ. इस ट्रैक्टर में आपको मिलता है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर की कीमत? इस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो कंपनी ने इस ट्रैक्टर की कीमत 7.01 से 7.29 लाख रूपए तक रखी है। इस ट्रैक्टर की कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है। इस ट्रैक्टर के साथ में कंपनी 6000 घंटे या 6 साल की वारंटी प्रदान करती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर ट्रैक्टर उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है जो 45 एचपी श्रेणी में एक मजबूत, भरोसेमंद और आधुनिक तकनीक से लैस ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं। इस ट्रैक्टर में शक्तिशाली इंजन, फुल कांसर्टेंट मेश ट्रांसमिशन, मल्टी-डिस्क ऑयल इम्मर्सड ब्रेक, बेहतरीन हाइड्रोलिक्स और बढ़िया लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जिससे यह खेती के लगभग सभी कार्यों जैसे जुताई, बुवाई, सिंचाई, ढुलाई और खेती से जुड़े अन्य भारी कामों में आसानी से उपयोग किया जा सकता है। कुल मिलाकर, न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर एक विश्वसनीय, टिकाऊ और उच्च प्रदर्शन वाला ट्रैक्टर है जो किसानों की उपज बढ़ाने और खेती के खर्च

कम करने में प्रभावी भूमिका निभाता है।



प्रीत 4049: 40 एचपी श्रेणी में एक मजबूत और विश्वसनीय ट्रैक्टर

जानें, प्रीत 4049 ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

किसान भाइयों, प्रीत 4049 ट्रैक्टर को खेती, मुख्य एवं पूर्व-जुताई, बुवाई, कटाई और परिवहन जैसे सभी सामान्य उपयोगी कार्यों के लिए तैयार किया गया है। यह ट्रैक्टर उच्च-प्रदर्शन वाले यंत्रों और व्यापक कटाई संयोजनों के साथ काम करने में सक्षम है। पारंपरिक ट्रैक्टरों से अलग, प्रीत 4049 का उपयोग अंतर-फसली खेती में भी आसानी से किया जा सकता है। इस लेख में आप प्रीत 4049 ट्रैक्टर की पूरी जानकारी जानेंगे— इंजन पावर, गियरबॉक्स, ब्रेक्स, हाइड्रोलिक्स, PTO, टायर साइज, वजन और कीमत।

प्रीत 4049 के इंजन की पावर

प्रीत 4049 ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो ट्रैक्टर में 40 hp श्रेणी का इंजन दिया गया है। जिसमें 3

सिलेंडर है इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 2892 cc है। ये ट्रैक्टर 2200 rated rpm जेनरेट करता है। ट्रैक्टर के इंजन में फ्यूल इंजेक्शन के लिए multi cylinder INLINE (BOSCH) का फ्यूल पंप दिया गया है। ट्रैक्टर में ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है। ट्रैक्टर पर मेटैलिक पेंट किया गया है जो ट्रैक्टर को अट्रैक्टिव बनाता है और ये पेंट लम्बे समय तक खराब भी नहीं होता। ट्रैक्टर में आगे अंदर की तरफ हलोजन हेड लम्प वाली लाइट दी गयी है।

प्रीत 4049 गियर्स, ट्रांसमिशन

प्रीत 4049 ट्रैक्टर में डबल एक्टिंग पावर स्टीयरिंग आपको मिलता है। ट्रैक्टर में गियर्स की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियरबॉक्स आपको मिलते हैं। ट्रांसमिशन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश और कांस्टेंट मेश ट्रांसमिशन आपको मिलता है। साइड शिफ्ट गियरबॉक्स होने के कारण ट्रैक्टर में सीट के आगे अच्छा space देखने को मिलता है।

प्रीत 4049 ब्रेक

प्रीत 4049 ट्रैक्टर में तेल में डूबे हुए ड्राई डिस्क ब्रेक्स दिए गए हैं। ब्रेक के पेडल भी काफी आराम दायक है आप आसानी से इसे दबाकर ब्रेक्स लगा सकते हैं।

प्रीत 4049 हाइड्रोलिक लिफ्टिंग कैपेसिटी

ट्रैक्टर में right राइट साइड पोজीशन कण्ट्रोल और ड्राफ्ट कण्ट्रोल के लिए दो लिवर दिए गए हैं। आप अच्छे से लिफ्ट को कल्टीवेटर और उपकरणों को इस्तेमाल करते समय अच्छे से एडजस्ट कर सकते हैं। ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1800 किलोग्राम है। ट्रैक्टर में जो लिफ्टिंग के लिंकेज पॉइंट है वो TPL केटेगरी -ii के साथ मिलता है। हाइड्रोलिक ट्यूब को जोड़ने के लिए इसमें 2 वाल दी गयी है।

प्रीत 4049 पीटीओ पावर और टायर साइज

प्रीत 4049 ट्रैक्टर में पीटीओ की बात करे तो इस ट्रैक्टर में पीटीओ की स्पीड 540 आरपीएम और 1000 आरपीएम मिलती है रिवर्स पीटीओ आपको इस ट्रैक्टर में मिलता है। पीटीओ की पावर 34 hp इस ट्रैक्टर में आपको मिलती है। प्रीत 4049 ट्रैक्टर के टायरों की बात करे तो ट्रैक्टर के आगे के टायर 6.00 X 16 के और पीछे के टायर 13.6 X 28 के इस ट्रैक्टर में मिलते है। ट्रैक्टर का कुल वजन 1800 किलोग्राम है।

प्रीत 4049 फ्यूल टैंक कैपेसिटी

ट्रैक्टर के ईंधन टैंक की क्षमता 67 किलोग्राम है जो की काफी बड़ी टैंक क्षमता इस ट्रैक्टर में आपको मिलती है खेत में आप लम्बे समय तक एक बार डीज़ल भर कर लंबे समय तक काम कर सकते है।

प्रीत 4049 ट्रैक्टर की कीमत?

भारत में प्रीत प्रीत 4049 की कीमत 6.52 लाख से ₹ 6.78 लाख रुपए तक है। कीमत में कई सथनो पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है। प्रीत 4049 ट्रैक्टर की कीमत भारतीय किसानों के बजट के अनुसार निर्धारित की जाती है।

मेरीखेती के हमारे इस लेख में आप प्रीत 4049 ट्रैक्टर के बारे में जाना है। आपके पास प्रीत 4049 से संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। ट्रैक्टरबर्ड पर आपको सभी प्रकार के ट्रैक्टरों, औजारों और अन्य कृषि उपकरणों से संबंधित सभी नवीनतम जानकारी मिलती है। ट्रैक्टरबर्ड ट्रैक्टर की कीमतों, ट्रैक्टर की तुलना, ट्रैक्टर से संबंधित फोटो, वीडियो, ब्लॉग और अपडेट के बारे में जानकारी के साथ-साथ सहायता भी प्रदान करता है।



घरेलू ट्रैक्टर सेल्स रिपोर्ट नवंबर 2025: ट्रैक्टर बिक्री में 30.08% की बढ़ोतरी, 92745 यूनिट्स बिकी

घरेलू सेल्स रिपोर्ट नवंबर 2025 के मुताबिक घरेलू ट्रैक्टर उद्योग ने नवंबर 2025 में शानदार प्रदर्शन किया। इस महीने में ट्रैक्टर उद्योग ने अच्छी वृद्धि हासिल की है जिससे की बाजार में अच्छी बढ़त देखने को मिल रही है। इस वृद्धि के पीछे ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक भावना, रबी सीजन की तैयारियाँ और मजबूत फाइनेंसिंग समर्थन प्रमुख कारण रहे। नवंबर 2025 में थोक ट्रैक्टर बिक्री 92,745 यूनिट रही, जो नवंबर 2024 के 71,300 यूनिट के मुकाबले 30.08% की वार्षिक वृद्धि है। अधिकांश कंपनियों की बिक्री बढ़ी, हालांकि बाजार हिस्सेदारी में पुनर्संतुलन जारी रहा।

ब्रांड-वार ट्रैक्टर बिक्री प्रदर्शन - नवंबर 2025

महिंद्रा एंड महिंद्रा ट्रैक्टर कंपनी (M&M)

नवंबर 2025 में महिंद्रा एंड महिंद्रा कंपनी ने 42,273 यूनिट की बिक्री की (पिछले वर्ष 31,746 यूनिट) जिससे की कंपनी ने 33.16% वृद्धि दर्ज की है। इस महीने में कंपनी का मार्केट शेयर 44.52% जो पीछे

साल 45.58% था यानिकि की कंपनी ने 1.06 प्रतिशत अंकों की बढ़त हासिल की है। महिंद्रा एंड महिंद्रा की उद्योग में सर्वाधिक बिक्री और बाजार हिस्सेदारी में मजबूत बढ़त।

टैफे ट्रैक्टर कंपनी

TAFE कंपनी ने 15,088 यूनिट की बिक्री की जो कि पिछले वर्ष 11,918 यूनिट थी, नवंबर 2025 में TAFE कंपनी ने 26.60% वृद्धि दर्ज की है। नवंबर 2025 में कंपनी का मार्केट शेयर 16.72% (नवंबर 2024) 16.27% हो गया जो की नवंबर 2025 में 0.45 प्रतिशत अंकों की मामूली गिरावट है।

सोनालिका ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में सोनालिका कंपनी ने अच्छी बिक्री की है। नवंबर 2025 में कंपनी ने 10,849 यूनिट की बिक्री है जो पिछले वर्ष 8,812 यूनिट थी। नवंबर 2025 में कंपनी ने 23.12% की वृद्धि दर्ज की है। इसकी मार्केट शेयर 12.36% से घट कर 11.70% (0.66 प्रतिशत अंकों की गिरावट) हो गया है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर कंपनी

एस्कॉर्ट्स कुबोटा कंपनी में नवंबर 2025 में 10,122 यूनिट की बिक्री की है जो पिछले वर्ष नवंबर 2024 में 8,730 यूनिट थी। कंपनी ने नवंबर 2025 में ट्रैक्टर बिक्री में 15.95% की वृद्धि दर्ज की हैं। कंपनी का मार्केट शेयर 12.24% से घट कर 10.91% (1.33 प्रतिशत अंकों की कमी) रह गया।

जॉन डियर ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में जॉन डियर ट्रैक्टर कंपनी ने 8,788 यूनिट ट्रैक्टर की बिक्री हासिल की जो की पिछले वर्ष 5,508 यूनिट थी इस प्रकार कंपनी ने इस साल ट्रैक्टर बिक्री में 59.55% की वृद्धि दर्ज की हैं। कंपनी का मार्केट शेयर 7.73% से बढ़ कर 9.48% हो गया हैं नवंबर 2025 में सबसे अधिक मार्केट शेयर बढ़त (1.75 प्रतिशत अंक) जॉन डियर कंपनी को मिली हैं।

न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर कंपनी

न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर कंपनी ने नवंबर 2025 में 3,701 यूनिट्स बचे जो पिछले वर्ष 3,014 यूनिट थी, इस साल कंपनी ने 22.79% की वृद्धि दर्ज की हैं। न्यू हॉलैंड कंपनी का मार्केट शेयर 4.23% से घट कर 3.99%(0.24 प्रतिशत अंकों की गिरावट) हो गया हैं।

वीएसटी ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में VST ट्रैक्टर ने 450 यूनिट की बिक्री की जो पिछले वर्ष 284 यूनिट रही इस साल कंपनी ने बिक्री में 58.45% की वृद्धि हासिल की हैं। मार्केट शेयर: 0.40% से भड़कर 0.49% (0.09 प्रतिशत अंक की बढ़त) हो गया हैं।

इंडो फार्म ट्रैक्टर कंपनी

इंडो फार्म कंपनी ने नवंबर 2025 में 428 यूनिट की बिक्री की हैं जो पिछले वर्ष नवंबर 2025 में 362 यूनिट रही, नवंबर 2025 में कंपनी ने 18.23% वृद्धि दर्ज की हैं। कंपनी का मार्केट शेयर 0.51% से घटकर 0.46%(0.05 प्रतिशत अंक की कमी) रह गया हैं।

एसडीएफ ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में SDF ट्रैक्टर कंपनी ने 79 यूनिट की बिक्री दर की हैं जो पिछले वर्ष 62 यूनिट थी। इस साल कंपनी ने बिक्री में 27.42% की वृद्धि दर्ज की हैं। नवंबर 2025 में कंपनी का मार्केट शेयर 0.09% (स्थिर) रहा हैं।

कैप्टेन ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में कैप्टेन कंपनी ने 317 यूनिट की बिक्री की जो की पिछले वर्ष 234 यूनिट रही थी इस साल नवंबर 2025 में कंपनी ने 35.47% की वृद्धि दर्ज की हैं। कंपनी के मार्केट शेयर 0.34% से बढ़ कर 0.33% (0.01 प्रतिशत अंक की मामूली बढ़त) हो गया हैं।

प्रीत ट्रैक्टर कंपनी

प्रीत ट्रैक्टर कंपनी ने इस साल नवंबर 2025 में 10.46% की वृद्धि हासिल की हैं इस साल नवंबर 2025 में कंपनी ने 412 यूनिट (पिछले वर्ष 373 यूनिट) की बिक्री की हैं। कंपनी का मार्केट शेयर 0.52% से घटकर 0.44%(0.08 प्रतिशत अंकों की गिरावट) रह गया हैं।

ऐस ट्रैक्टर कंपनी

नवंबर 2025 में ऐस कंपनी ने 238 यूनिट की बिक्री दर्ज की हैं, जो पिछले वर्ष 257 यूनिट थी। इस साल कंपनी ने इस महीने में 7.39% की गिरावट दर्ज की हैं। कंपनी का मार्केट शेयर 0.36% से घटकर 0.26% (0.10 प्रतिशत अंकों की कमी) रह गया हैं।

नवंबर 2025 में घरेलू ट्रैक्टर उद्योग ने 30.08% की मजबूत वृद्धि के साथ 92,745 यूनिट की बिक्री दर्ज की, जिससे बाजार में सकारात्मक रुझान देखने को मिला। महिंद्रा, जॉन डियर, TAFE और अन्य कंपनियों ने बेहतर प्रदर्शन किया, जबकि कुछ ब्रांडों की बाजार हिस्सेदारी में मामूली उतार-चढ़ाव रहा। रबी सीजन की मांग, ग्रामीण बाजार की मजबूती और बेहतर फाइनेंसिंग ने समग्र उद्योग वृद्धि को गति दी।



किसानों के लिए खुशखबरी! लॉन्च हुआ

सोलिस का हाई-टेक JP 975 मॉडल

सोलिस का हाई-टेक JP 975 ट्रैक्टर

सोलिस एक विश्वसनीय और लोकप्रिय ट्रैक्टर निर्माता ब्रांड है। यह अपनी टेक्नोलॉजी और कार्यकुशलता के लिए जाना जाता है। भारतीय कृषि में तकनीक और शक्ति का एक नया अध्याय शुरू हो गया है। सोलिस की तरफ से एडवांस्ड सोलिस JP 975 ट्रैक्टर को लॉन्च किया गया है, जो किसानों के लिए नई टेक्नोलॉजी वाले प्लेटफॉर्म और दमदार पावर का एक नया दौर लेकर आया है। यह हाई-टेक ट्रैक्टर विशेष रूप से प्रगतिशील खेती की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है। इसलिए यह जबदस्त ताकत, शानदार नियंत्रण और उत्तम उत्पादकता का बेजोड़ संगम है।

सोलिस JP 975 ट्रैक्टर

सोलिस JP 975 एक एडवांस्ड ट्रैक्टर है, जिसमें 4-सिलेंडर वाला फ्यूल-एफिशिएंट JP-Tech इंजन दिया गया है। इसमें 2000 किलो की ताकतवर हाइड्रोस्टैटिक हाइड्रोलिक्स, 11 स्पीड वाला DEXA PTO और 15 फॉरवर्ड + 5 रिवर्स गियर वाला एपिसाइक्लिक ट्रांसमिशन मिलता है। ट्रैक्टर का इंटरनेशनल स्टाइल, आरामदायक ड्राइविंग और उन्नत फीचर्स इसे किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प बनाते हैं। यह ट्रैक्टर किसानों को कम समय और कम लागत में ज़्यादा पैदावार (अधिक उपज) हासिल करने में मदद करेगा। सही मायनों में यह मशीन कृषि क्षेत्र में एक नई और बेहतर सुबह की शुरुआत करने वाला मॉडल साबित हो सकता है। अब आइए, देखते हैं कि यह नया ट्रैक्टर किसानों के लिए कौन-कौन से खास फीचर्स लेकर आया है।

सोलिस JP 975 की प्रमुख तकनीकी विशेषताएं

सोलिस JP 975 ट्रैक्टर में JP-Tech इंजन मिलता है, जो खेत के भारी कामों में भी 2100 RPM पर कम डीजल खर्च करके शानदार प्रदर्शन देता है। 48 - 50 HP की पावर और 205 Nm का जबरदस्त टॉर्क इस ट्रैक्टर को भारी कृषि उपकरण खींचने के लिए और भी ताकतवर बनाता है। इसमें कम कंपन वाला रिब्ड इंजन, बेहतर एयर इनटेक सिस्टम और 500 घंटे का लंबा सर्विस इंटरवल मिलता है। इसकी वजह से यह ट्रैक्टर किसानों के लिए पावर, कंफर्ट और किफायत का बेहतरीन पैकेज है।

नया Solis JP 975 ट्रैक्टर में सिंक-शिफ्ट और पूरी तरह कॉन्स्टेंट मेश वाला एडवांस्ड ट्रांसमिशन सिस्टम दिया गया है, जिससे गियर बदलना बेहद स्मूथ होता है और कम शोर होता है। ट्रैक्टर में 15 फॉरवर्ड + 5 रिवर्स गियर मिलते हैं। गियर शिफ्टिंग पैटर्न L-M-H-R रेंज में है, जिससे हर कृषि उपकरण के लिए कम से कम 5 उपयुक्त स्पीड विकल्प उपलब्ध होते हैं।

एक लाइन में रिवर्स और मीडियम गियर स्मार्ट शटल से खेत और सड़क दोनों जगह बेहतर, तेज और आरामदायक ड्राइविंग मिलती है। 540 RPM, रिवर्स और MSPTO (कुल 11 PTO स्पीड ऑप्शन) के साथ यह ट्रैक्टर हर कृषि एप्लीकेशन के लिए सही PTO स्पीड देता है, जिससे काम और भी कुशलता से होता है।

सोलिस JP 975 ट्रैक्टर के आकर्षक फीचर्स

नया डिजाइन ओपन सेंटर, लाइव ADDC (ऑटोमैटिक, ड्राफ्ट एंड डेप्थ कंट्रोल) हाइड्रोलिक टाइप, अधिकतम 2000 किलोग्राम तक की हैवी लिफ्टिंग क्षमता एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन पोজিশन और ड्राफ्ट लीवर, उच्च लिफ्टिंग क्षमता वाले नए हैवी-ड्यूटी हाइड्रोलिक भारी उपकरण जैसे रोटोवेटर, MB प्लाउ, लेजर लेवलर आदि आसानी से उठा लेता है।

1DA सहायक वाल्व ड्राफ्ट सेंसिंग हर तरह की मिट्टी के लिए उपयुक्त। ऑपरेशन में पूरा आराम और बेहतर माइलेज। इसमें नया ओपन सेंटर, लाइव ऑटोमैटिक, ड्राफ्ट एंड डेप्थ कंट्रोल (ADDC) हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है, जो खेत में हर तरह के काम को स्मूद

तरीके से करता है। ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 2000 किलोग्राम तक है, इसलिए भारी इम्प्लीमेंट भी बिना किसी परेशानी के उठाता है।

पोजिशन और ड्राफ्ट लीवर को एर्गोनॉमिक तरीके से बनाया गया है ताकि किसान को ऑपरेशन में ज्यादा आराम मिले। नया हैवी-ड्यूटी हाइड्रोलिक सिस्टम रोटोवेटर, MB प्लाउ, लेजर लेवलर जैसे भारी औजार आसानी से उठा लेता है। इसमें दिया गया 1DA सहायक वाल्व और बेहतर ड्राफ्ट सेंसिंग हर तरह की मिट्टी में बढ़िया काम करती है। कुल मिलाकर, यह हाइड्रोस्टैटिक हाइड्रोलिक्स सिस्टम किसान को बेहतर कंट्रोल, आरामदायक ऑपरेशन और अच्छा माइलेज देता है।

एडवांस सोलिस JP 975: कंफर्ट, सेफ्टी और स्टाइल

आसान संचालन क्लच और पैडल से कम थकान और ज्यादा आरामदायक ड्राइविंग अनुभव। इसमें पावर स्टीयरिंग मिलता है, जिससे मोड़ना बेहद आसान और स्मूद हो जाता है। OIB (Oil Immersed Brakes) ज्यादा असरदार, मजबूत और लंबे समय तक चलने वाले 9.54 इंच- 2 डिस्क (कैम द्वारा संचालित) के साथ बेहतरीन ब्रेकिंग।

एक्स्ट्रा कुशनिंग 4-वे एडजस्टेबल सीट है, जिससे लंबे समय तक काम करते हुए भी थकान कम होती है। पूरी तरह फ्लैट रबर मैट वाला प्लेटफॉर्म-पैरों को आराम और स्लिप-फ्री अनुभव। लैडर टाइप चेसिस ड्राइविंग के दौरान कम वाइब्रेशन देता है, जिससे ड्राइविंग और भी आरामदेह हो जाती है। आगे का टायर: 7.5x16 / 9.5x20, पीछे का टायर: 14.9x48 बेहतर ट्रैक्शन और मजबूत रोड ग्रिप बड़े टायर आकार से खेत में और सड़क पर बेहतर पकड़ मिलती है।

आधुनिक फीचर्स और शानदार लुक

सोलिस JP 975 ट्रैक्टर में आपको LED लाइट्स देखने को मिलती है, जो रात के काम में जबरदस्त

रोशनी देती हैं। साथ ही, इसमें डिजिटल मीटर दिया गया है, जो सभी जानकारी साफ और आसानी से दिखाता है। ट्रैक्टर का स्मार्ट डिजाइन और प्रीमियम लुक इसको और भी ज्यादा आकर्षक बनाता है। इसके इंजन और पार्ट्स की गुणवत्ता इतनी बेहतर कि बार-बार सर्विस की जरूरत नहीं। कंपनी फिटेड बंपर, रियर टो हुक, ड्रॉबार और फ्रंट टो हुक—हर काम के लिए तैयार। मजबूत और टिकाऊ हेवी-ड्यूटी बॉडी, जो खराब रास्तों पर भी जबरदस्त प्रदर्शन देती है। बड़े किसानों और कमर्शियल उपयोग—दोनों के लिए एकदम सही विकल्प।



रिटेल ट्रैक्टर सेल्स रिपोर्ट नवंबर 2025: ट्रैक्टर बिक्री में 56.55% की बढ़ोतरी, 1,26,033 यूनिट्स की बिक्री

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) ने नवंबर 2025 के लिए ट्रैक्टर सेगमेंट की रिटेल सेल्स रिपोर्ट जारी की है, और इस बार के आंकड़े उद्योग के लिए बेहद उत्साहजनक साबित हुए हैं। रिपोर्ट

के अनुसार, इस महीने कुल 1,26,033 ट्रैक्टरों की बिक्री हुई, जो पिछले वर्ष नवंबर 2024 में बेची गई 80,507 यूनिट्स के मुकाबले 56.55% की भारी वृद्धि को दर्शाती है। यह वृद्धि न केवल किसानों की बढ़ती मांग को दिखाती है, बल्कि बाजार में बेहतर आर्थिक माहौल और अनुकूल परिस्थितियों की तरफ भी संकेत करती है।

ब्रांड-वार ट्रैक्टर बिक्री प्रदर्शन (नवंबर 2025)

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड (ट्रैक्टर डिवीजन)

महिंद्रा ने एक बार फिर अपनी नंबर-वन स्थिति को मजबूती से कायम रखा है। कंपनी की बिक्री नवंबर 2024 के 19,521 यूनिट्स से बढ़कर नवंबर 2025 में 31,938 यूनिट्स पहुंच गई, जो 63.61% की उल्लेखनीय वृद्धि है। मार्केट शेयर भी बढ़कर 24.25% से 25.34% हो गया, जो दर्शाता है कि महिंद्रा की पकड़ बाजार में लगातार मजबूत होती जा रही है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा (स्वराज डिवीजन)

स्वराज डिवीजन ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए नवंबर 2025 में 23,220 यूनिट्स की बिक्री दर्ज की, जो पिछले साल की 14,703 यूनिट्स के मुकाबले 57.93% अधिक है। कंपनी का मार्केट शेयर थोड़ा बढ़कर 18.26% से 18.42% पर पहुंच गया, जो किसानों के बीच स्वराज ट्रैक्टरों की लगातार बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है।

सोनालिका ट्रैक्टर्स

सोनालिका की बिक्री भी इस माह प्रभावी रही। कंपनी ने नवंबर 2024 में जहां 10,856 यूनिट्स बेची थीं, वहीं इस साल नवंबर 2025 में 15,742 यूनिट्स की बिक्री की, जो 45.01% की वृद्धि को दर्शाता है। हालांकि बिक्री में बढ़ोतरी हुई लेकिन मार्केट शेयर 13.48% से घटकर 12.49% रह गया, जिससे स्पष्ट है कि अन्य ब्रांडों की ग्रोथ और

भी तेज रही।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने इस महीने शानदार और लगभग दोगुनी वृद्धि हासिल की। नवंबर 2024 की 7,399 यूनिट्स के मुकाबले नवंबर 2025 में कंपनी ने 14,521 यूनिट्स बेचीं—जो 96.26% की तेज़ उछाल है। मार्केट शेयर भी बढ़कर 9.19% से 11.52% पर पहुंच गया, जो इस ब्रांड के लिए बेहद महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।

टैफे ट्रैक्टर्स

टैफे की बिक्री नवंबर 2025 में 13,559 यूनिट्स रही, जो पिछले वर्ष नवंबर 2024 की 9,387 यूनिट्स की तुलना में 44.44% की बढ़त है। हालांकि बिक्री बढ़ी, लेकिन मार्केट शेयर 11.66% से घटकर 10.76% रह गया, जो प्रतिस्पर्धी कंपनियों की तेजी से बढ़ती बिक्री के कारण है।

जॉन डियर

जॉन डियर ने भी मजबूत प्रदर्शन किया और नवंबर 2025 में 9,584 यूनिट्स की बिक्री दर्ज की, जो पिछले साल की 5,959 यूनिट्स की तुलना में 60.83% की वृद्धि है। कंपनी का मार्केट शेयर थोड़ा बढ़कर 7.40% से 7.60% हो गया, जिससे जॉन डियर की बाजार में स्थिर और सकारात्मक उपस्थिति झलकती है।

आयशर ट्रैक्टर्स

आयशर की बिक्री नवंबर 2025 में 7,027 यूनिट्स रही, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 5,560 यूनिट्स था। इस प्रकार आयशर ने 26.38% की वृद्धि दर्ज की। फिर भी कंपनी का मार्केट शेयर 6.91% से घटकर 5.58% आ गया, जो प्रतिस्पर्धा में थोड़ी कमजोरी दिखाता है।

न्यू हॉलैंड

न्यू हॉलैंड ने बेहद मजबूत प्रदर्शन करते हुए नवंबर 2025 में 5,784 यूनिट्स बेचीं, जबकि पिछले वर्ष यह सिर्फ 3,104 यूनिट्स थीं। इस आधार पर कंपनी ने 86.34% की शानदार वृद्धि दर्ज की। मार्केट शेयर भी बढ़कर 3.86% से 4.59% पर पहुंच गया, जो बाजार में न्यू हॉलैंड की मजबूत वापसी का संकेत है।

अन्य कंपनियां

अन्य ट्रैक्टर ब्रांड्स ने संयुक्त रूप से नवंबर 2025 में 4,658 यूनिट्स बेचीं, जबकि पिछले साल यह आंकड़ा 4,018 यूनिट्स था। यानी 15.93% की वृद्धि हासिल हुई। फिर भी बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते इन कंपनियों का मार्केट शेयर 4.99% से घटकर 3.70% हो गया।

नवंबर 2025 में ट्रैक्टर मांग क्यों रही इतनी मजबूत?

नवंबर 2025 का महीना ट्रैक्टर उद्योग के लिए बेहद सफल रहा, और इसके पीछे कई प्रमुख कारण जिम्मेदार रहे: दिवाली अक्टूबर में होने के कारण, कई फेस्टिव डिलीवरी उसी महीने पूर्ण हो गई थीं, जबकि पिछले वर्ष अधिकांश रजिस्ट्रेशन नवंबर में हुए थे। OEMs और डीलर्स द्वारा आकर्षक ऑफर्स, बोनस योजनाएँ और फाइनेंस सुविधाओं ने किसानों को खरीदारी के लिए प्रेरित किया। GST 2.0 के लाभों ने किसानों की लागत कम की, जिससे नए ट्रैक्टर खरीदने की क्षमता बढ़ी। अच्छी फसल, बेहतर आय और सकारात्मक मनोभाव ने बाजार में ट्रैक्टरों की मांग को और बढ़ावा दिया। पूरे महीने शोरूम विजिट्स बढ़े, जिससे नवंबर ट्रैक्टर उद्योग के लिए एक रिकॉर्ड-सेटिंग महीना बन गया।

**भेड़ पालन बिजनेस
जानें, भेड़ों की टॉप 5
सबसे अच्छी नस्ले**



भेड़ पालन व्यवसाय - जानें, भेड़ों की टॉप 5 सबसे अच्छी नस्ले

भारत की 5 सर्वश्रेष्ठ भेड़ नस्लें और उनकी विशेषताएँ

भेड़ पालन भारत में एक पारंपरिक, भरोसेमंद और लाभकारी पशुपालन व्यवसाय माना जाता है। यह व्यवसाय मुख्य रूप से ऊन और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में सीमित मात्रा में दूध का उपयोग भी होता है। भेड़ ऊन प्राप्त करने का सबसे प्रमुख और विश्वसनीय स्रोत हैं, इसलिए ऊनी वस्त्र उद्योग में इनका विशेष महत्व है। कम निवेश, अपेक्षाकृत सरल प्रबंधन, कम रख-रखाव और प्राकृतिक चरागाहों पर आसानी से पालन हो जाने के कारण भेड़ पालन छोटे, सीमांत और संसाधन-सीमित किसानों के लिए भी उपयुक्त व्यवसाय है। सही योजना और नस्ल चयन के साथ यह नियमित आय का अच्छा साधन बन सकता है। हालांकि, भेड़ पालन में वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि किसान अपने क्षेत्र की जलवायु, उपलब्ध चारा, पानी की स्थिति और बाजार की मांग के अनुसार सही नस्ल का चयन करें। भारत में भेड़ों की कई उन्नत और स्थानीय नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें ऊन की गुणवत्ता, शरीर का वजन, रोग

सहनशीलता और उत्पादन क्षमता के आधार पर काफी अंतर होता है। नीचे गद्दी, दक्कनी, मांड्या, नेल्लोर और मारवाड़ी भेड़ नस्लों की विशेषताओं का विस्तृत विवरण दिया गया है, जिससे किसान अपने लिए उपयुक्त नस्ल चुन सकें।

गद्दी नस्ल की भेड़

गद्दी नस्ल की भेड़ें मुख्य रूप से जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी एवं ठंडे क्षेत्रों में पाई जाती हैं। यह नस्ल आकार में अपेक्षाकृत छोटी होती है, लेकिन कठोर ठंड और ऊंचाई वाले इलाकों में भी आसानी से जीवित रहने की क्षमता रखती है। गद्दी नस्ल का प्रमुख उद्देश्य ऊन उत्पादन है। नर भेड़ों में मजबूत सींग पाए जाते हैं, जबकि मादा भेड़ें सामान्यतः सींग रहित होती हैं। इनका ऊन सफेद, चमकदार और मध्यम गुणवत्ता का होता है, जिसकी बाजार में स्थिर मांग बनी रहती है। एक गद्दी भेड़ से औसतन 1.0 से 1.2 किलोग्राम ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त हो जाता है। आमतौर पर वर्ष में 2 से 3 बार ऊन की कटाई की जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों के लिए

यह नस्ल विशेष रूप से उपयोगी और लाभकारी मानी जाती है।

दक्कनी नस्ल की भेड़

दक्कनी भेड़ें भारत की प्रमुख ऊन उत्पादक नस्लों में गिनी जाती हैं। यह नस्ल आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे गर्म और शुष्क क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है। इन क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार यह नस्ल अच्छी तरह अनुकूलित हो चुकी है। दक्कनी भेड़ों का रंग सामान्यतः काला या गहरा भूरा होता है। इनसे ऊन का उत्पादन मात्रा में अधिक होता है, हालांकि गुणवत्ता अपेक्षाकृत मोटी होती है। प्रति भेड़ लगभग 4 से 5 किलोग्राम ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकता है। इस नस्ल का ऊन बालों और रेशों के मिश्रण से बना होता है, जिसका उपयोग मुख्यतः मोटे कंबल, दरी और कालीन बनाने में किया जाता है। कठिन जलवायु में भी टिके रहने की क्षमता इसे किसानों के लिए उपयोगी बनाती है।

मांड्या नस्ल की भेड़

मांड्या नस्ल मुख्य रूप से कर्नाटक के मांड्या जिले और आसपास के क्षेत्रों में पाई जाती है। यह एक छोटी कद-काठी वाली नस्ल है, लेकिन मांस उत्पादन के लिए काफी लोकप्रिय है। इस नस्ल की भेड़ों का रंग प्रायः सफेद होता है, जबकि कभी-कभी चेहरे पर हल्का भूरा रंग भी दिखाई देता है। नर भेड़ का औसत वजन लगभग 30-35 किलोग्राम तथा मादा भेड़ का वजन 22-25 किलोग्राम के बीच होता है। मांड्या भेड़ों से ऊन की मात्रा कम प्राप्त होती है, लेकिन मांस की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है। कम चारे में पलने और स्थानीय परिस्थितियों में जल्दी ढल जाने की क्षमता के कारण यह नस्ल किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित होती है।

नेल्लोर नस्ल की भेड़

नेल्लोर नस्ल को भारत की सबसे लंबी कद-काठी वाली भेड़ नस्ल माना जाता है। यह मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश

और तेलंगाना के क्षेत्रों में पाई जाती है और मांस उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। इस नस्ल के शरीर पर ऊन लगभग नहीं के बराबर होता है, बल्कि छोटे और घने बाल पाए जाते हैं। बनावट में यह कुछ हद तक बकरी जैसी दिखाई देती है। इसके कान लंबे और झुके हुए होते हैं तथा चेहरा भी लंबा होता है। नर नेल्लोर भेड़ का औसत वजन लगभग 36-38 किलोग्राम और मादा का वजन 28-30 किलोग्राम तक होता है। अधिकतर भेड़ें लाल रंग की होती हैं, इसी कारण इसे “नेल्लोर रेड” भी कहा जाता है। तेजी से बढ़ने की क्षमता के कारण यह नस्ल व्यावसायिक मांस उत्पादन के लिए उपयुक्त है।

मारवाड़ी नस्ल की भेड़

मारवाड़ी भेड़ें राजस्थान की प्रमुख नस्लों में से एक हैं और शुष्क, अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मानी जाती हैं। यह नस्ल मुख्य रूप से जोधपुर, जयपुर के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में भी पाई जाती है। मारवाड़ी भेड़ों का चेहरा काला और नाक उभरी हुई होती है। इनके पैर लंबे और मजबूत होते हैं, जबकि पूंछ छोटी और नुकीली होती है। यह नस्ल कठोर जलवायु, कम पानी और सीमित चारे में भी जीवित रहने में सक्षम होती है। इनका ऊन मध्यम गुणवत्ता का होता है, जबकि मांस की बाजार में अच्छी मांग रहती है। कठिन परिस्थितियों में भी अच्छा उत्पादन देने की क्षमता इसे शुष्क क्षेत्रों के किसानों के लिए आदर्श बनाती है।

भेड़ पालन शुरू करने से पहले ध्यान देने योग्य बातें

भेड़ पालन से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार नस्ल का चयन करें। ऊन या मांस, जिस उद्देश्य से पालन करना हो, उसी के अनुसार नस्ल चुनना लाभकारी रहता है। इसके साथ ही टीकाकरण, कृमिनाशक

दवाओं और रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि झुंड स्वस्थ बना रहे। पर्याप्त चरागाह, संतुलित आहार और साफ पानी की नियमित उपलब्धता सुनिश्चित करें। अंत में, स्थानीय बाजार में ऊन और मांस की मांग को समझकर उत्पादन की योजना बनाएं। सही नस्ल, उचित प्रबंधन और बाजार की जानकारी के साथ भेड़ पालन एक स्थायी और लाभदायक व्यवसाय साबित हो सकता है।



अजवाइन (अजमोद बीज) बीज की खेती कैसे की जाती है?

अजवाइन जिसे अजमोद बीज (Trachyspermum ammi L.) के नाम से भी जाना जाता है, Apiaceae परिवार से संबंधित है।

अजवाइन की उत्पत्ति का स्थान मिस्र (Egypt) है, भारत में एक लोकप्रिय मसाला फसल के रूप में इसकी खेती की जाती है।

यह एक वार्षिक शाकीय पौधा है जिसमें छोटे अंडाकार भूरे-भूरे रंग के फल होते हैं।

मुख्य अजवाइन उत्पादन करने वाले देश हैं: भारत, फारस, ईरान, मिस्र, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और उत्तर अफ्रीका।

भारत में, इसका उत्पादन मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश,

तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में केंद्रित है।

इस लेख में हम आपको इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

अजवाइन के अन्य नाम

भारत में इसे आमतौर पर अजवाइन कहा जाता है और इसके कई अन्य क्षेत्रीय नाम भी हैं। तमिल में इसे ओमम और तेलुगु में वामु कहा जाता है।

अजवाइन की खेती के लिए जलवायु

- अजवाइन एक ठंड को पसंद करने वाली फसल है और मुख्य रूप से भारत में रबी के मौसम में उगाई जाती है।
- देश के कुछ क्षेत्रों में इसे खरीफ फसल के रूप में भी बोया जाता है। मध्यम रूप से ठंडा और शुष्क मौसम पौधों की अच्छी वृद्धि और विकास के लिए अनुकूल होता है।
- फूल आने के बाद अत्यधिक आर्द्रता से बचाव लाभकारी होता है।
- लगातार नम और बादल भरा मौसम कीटों और कई बीमारियों को आमंत्रित करता है।
- इसकी वृद्धि अवधि के दौरान इसे 15-27° C के तापमान और 60-70% की सापेक्ष आर्द्रता की आवश्यकता होती है और बीज विकास के दौरान इसे गर्म मौसम पसंद है।
- हालांकि यह फसल सर्दियों के मौसम के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन कम तापमान फसल की वृद्धि में बाधा डालता है।

अजवाइन किस प्रकार की मिट्टी में उगती है?

- अजवाइन विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन यह अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी तरह से बढ़ती है।
- जैविक पदार्थों से भरपूर चिकनी-दोमट मिट्टी का भी उपयोग किया जा सकता है, बशर्ते

पर्याप्त जल निकासी की सुविधा हो।

- हालांकि, यह फसल रेतीली या बजरी वाली मिट्टी में अच्छी तरह से पनपती नहीं है। अत्यधिक नमी बनाए रखने के कारण, भारी मिट्टी अजवाइन की खेती के लिए आदर्श मानी जाती है।
- हालांकि यह फसल लवणीयता को सहन कर सकती है, लेकिन यह हमेशा उच्च उपज और बेहतर गुणवत्ता वाले पत्तों को तटस्थ मिट्टी (pH 6.5 से 8.5) में देती है। अतः इसकी खेती अम्लीय मिट्टी में करने से बचना चाहिए।

किस्मों का चयन

किस्मों का चयन मुख्य रूप से उनकी मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों के प्रति अनुकूलता पर निर्भर करता है और यह भी देखा जाता है कि उनमें कीटों और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता / सहनशीलता हो। विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए कई किस्में विकसित की गई हैं। विभिन्न राज्यों के लिए अनुशंसित कुछ प्रमुख खेती योग्य किस्मों का विवरण निम्नलिखित है:

- राजस्थान - अजमेर अजवाइन 1 (AA-1), अजमेर अजवाइन 2(AA-2), अजमेर अजवाइन 73, अजमेर अजवाइन 93, प्रताप अजवाइन 1
- गुजरात - गुजरात अजवाइन 1
- आंध्रप्रदेश - लम सिलेक्शन 1, लम सिलेक्शन 2
- बिहार - R.A. 1-80 , R.A. 19-80

भूमि की तैयारी

- अच्छी अंकुरण और वृद्धि के लिए मिट्टी को बारीक और समतल तैयार किया जाना चाहिए।
- पहली जुताई गहरी मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए, उसके बाद 2-3 हल्की जुताई हेरो या कल्टीवेटर से करनी चाहिए।
- हर जुताई के बाद पटेला चलाना चाहिए ताकि नमी संरक्षित रहे। दीमक प्रभावित क्षेत्रों में, अंतिम जुताई के समय एंडोसल्फान 4% (20-25 किग्रा/हेक्टेयर), क्विनालफॉस 1.5%, या मिथाइल पेराथियोन 3% पाउडर मिलाना चाहिए। अच्छी

अंकुरण के लिए मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

बुवाई का समय

बुवाई का समय एक महत्वपूर्ण गैर-आर्थिक कृषि तकनीक है, जो फसल की उपज और कीट/रोगों के प्रभाव को प्रभावित करता है।

अजवाइन ठंड पसंद करने वाली फसल है और भारत में मुख्य रूप से रबी मौसम में उगाई जाती है। कुछ क्षेत्रों में इसे खरीफ फसल के रूप में भी उगाया जाता है।

- - रबी मौसम के लिए इसे सितंबर-अक्टूबर के महीनों में उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में बोया जाता है।
- - खरीफ मौसम के लिए, इसे जुलाई-अगस्त में बोया जाता है।
- - दक्षिण भारत में, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में, इसे आमतौर पर अगस्त के मध्य में बोया जाता है और दिसंबर-जनवरी में काटा जाता है।

अजवाइन की प्रारंभिक फसल ज्यादातर बारानी होती है और इसे अगस्त में बोया जाता है। मुख्य मौसम की फसल को रबी मौसम के दौरान सितंबर-अक्टूबर में बोया जाता है।

अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए बुवाई का समय इस तरह से समायोजित करना चाहिए कि बीज विकास और परिपक्वता चरण सूखा और वर्षा रहित अवधि के साथ मेल खाए।

बुवाई के लिए बीज की मात्रा

- बुवाई के लिए आवश्यक बीज की मात्रा मुख्य रूप से उस फसल मौसम पर निर्भर करती है, जिसके लिए फसल बोई जा रही है।
- रबी मौसम की फसल के लिए 2.5-3.0 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है।
- खरीफ मौसम की फसल के लिए 4-5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

- बुवाई के समय मिट्टी में प्रारंभिक नमी पर्याप्त होनी चाहिए ताकि अंकुरण संतोषजनक हो सके।

बुवाई की विधि

- अजवाइन की बुवाई छिड़काव (ब्रोडकास्टिंग) या पंक्ति विधि से की जाती है। सिंचित खेती में पंक्तियों के बीच 45 सेमी और वर्षा आधारित खेती में 30 सेमी की दूरी रखी जाती है।
- बीज 10-12 दिनों में अंकुरित हो जाते हैं। पौधों के बीच 20-30 सेमी का अंतर बनाए रखना चाहिए।
- आमतौर पर अजवाइन को छिड़काव विधि से बोया जाता है, लेकिन पंक्ति विधि से बुवाई करने से अंतर-संवर्धन कार्य आसान होता है।
- छोटे बीजों के कारण इन्हें 1.0 से 1.5 सेमी गहराई पर बोना चाहिए और बीज को सूखी रेत के साथ मिलाकर समान रूप से फैलाना उचित रहता है।

खाद और उर्वरक

- खाद और उर्वरकों का उपयोग मिट्टी परीक्षण के परिणाम के आधार पर किया जाना चाहिए।
- अच्छी सिंचित फसल के लिए, 10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या कंपोस्ट जुताई से पहले खेत में समान रूप से डालनी चाहिए। अंतिम जुताई के समय 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फॉस्फोरस, और 50 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर डालें।
- कम उपजाऊ मिट्टी में 40 किग्रा अतिरिक्त नाइट्रोजन दो हिस्सों में, एक 45 दिनों बाद और दूसरा फूल आने से पहले, दें।
- मध्यम से उच्च उपजाऊ मिट्टी में अतिरिक्त उर्वरकों की जरूरत नहीं होती। राजस्थान और गुजरात की मिट्टियों में आमतौर पर पोटाश की आवश्यकता नहीं होती।
- वर्षा आधारित खेती में हर 2-3 साल में 10 टन सड़ी गोबर खाद डालें। इसके अलावा, बुवाई के समय 40 किग्रा नाइट्रोजन, 20 किग्रा फॉस्फोरस और 20 किग्रा पोटाश डालें।

सिंचाई

- अजवाइन की खेती वर्षा आधारित और सिंचित दोनों तरीकों से की जाती है। सिंचित खेती में लगभग 5 हल्की सिंचाइयों की जरूरत होती है।
- यदि बुवाई के बाद मिट्टी में नमी कम हो, तो 4-5 दिनों के अंदर हल्की सिंचाई करें ताकि अंकुरण बेहतर हो और मिट्टी के जमने से बचा जा सके।
- जलवायु और मिट्टी के अनुसार, 15-25 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। 0.8 IW/CPE अनुपात पर सिंचाई से बेहतर उत्पादन मिलता है।

अजवाइन की फसल में खरपतवार नियंत्रण

- शुरुआत में अजवाइन की फसल धीमी गति से बढ़ती है, इसलिए खेत को खरपतवार रहित बनाए रखना आवश्यक होता है। खेत में कुल 2-3 बार हाथ से निराई और गुड़ाई करना जरूरी होता है।
- पहली खरपतवार निकासी बुवाई के 30 दिन बाद करनी चाहिए और साथ ही पंक्तियों के बीच सुझाए गए अंतराल को बनाए रखते हुए कमजोर पौधों को हटाना चाहिए।
- इसके बाद जरूरत के अनुसार हर 30 दिन के अंतराल पर निराई की जानी चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए ऑक्साडियार्जिल @0.075 किग्रा/हेक्टेयर का पूर्व-उद्भव छिड़काव या बुवाई के बाद पेंडिमेथालिन @1 किग्रा/हेक्टेयर का छिड़काव किया जा सकता है।
- ऑक्साडियार्जिल @0.075 किग्रा/हेक्टेयर के साथ 45 दिन बाद हाथ से एक बार खरपतवार निकालना अजवाइन की फसल में खरपतवार प्रबंधन का प्रभावी तरीका है।

फसल की कटाई और उपज

- फसल का परिपक्वता काल 130-180 दिनों का होता है, जो फसल की किस्म और मौसम पर निर्भर करता है। सामान्यतः कटाई फरवरी से मई के बीच की जाती है।
- परिपक्वता के समय फूलना बंद हो जाता है और बीज विकसित होकर गुच्छों में भूरे रंग के हो जाते हैं। फसल को दरांती या हाथ से काटा जाता है और सूखने के लिए ढेर में रखा जाता है, बंडल को उल्टा रखकर, फिर डंठल से मारकर फलों को अलग किया जाता है।
- वर्षा आधारित खेती में औसतन 4-6 क्विंटल और सिंचित खेतों में 12-15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

सफाई, पैकेजिंग और भंडारण

- बीजों को जूट की थैलियों में पॉलीथीन फिल्म लगाकर रखा जाता है। अजवाइन बीजों को साफ करने के लिए वैक्यूम ग्रेविटी सेपरेटर का उपयोग किया जाता है।
- अच्छे से साफ किए गए बीजों को 7-8% नमी स्तर पर और 40% सापेक्ष आर्द्रता में रखा जाता है।
- पैक किए गए बीजों को ठंडी, सूखी और हवादार जगह पर सामान्य परिस्थितियों में अगले सीजन की बुवाई तक सुरक्षित रखा जाता है।



किसानो की बात मेरी खेती के साथ



www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010